Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाकाली
उपासना

रणधीर प्रकाशन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री

महाकाली उपासना

संग्रहकर्ता—

प्रसिद्ध काली तान्त्रिक शमसानवासी
स्वामी उग्रचण्डेश्वर 'कपाली'

काली की उत्पत्ति की कथा — काली चालीसा
काली का अर्थ तत्व — काली का स्वरूप
काली और उसके भेद — काली महिमा
श्री काली स्तुति — काली साधन मन्त्र
सामान्य पूजा विधि — ध्यान का स्वरूप
सुधाधारा काली स्तोत्र — श्री काली स्तवन
कालिका सहस्त्रनाम — श्री कालिकाष्टक
काली कवच — काली शतनाम स्तोत्र
काली हृदयम् — काली पटलम्

और आरती आदि विषयों सहित

मूल्य : 20-00

रणधीर

पूजा-पाठ व ज्योतिष पुस्तकों के लिए
नाथ पुस्तक भण्डार
194, दरीबा कलां, दिल्ली-6, दूरभाष : 23275344

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

प्रकाशक: Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
रणधीर प्रकाशन
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार
फोन : (01334) 226297

वितरक :
रणधीर बुक सेल्स
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

दिल्ली विक्रेता :
गगन बुक डिपो
4694, बल्लीमारान, दिल्ली-110006
फोन : (011) 23950635

संस्करण—सन् 2003

मुद्रक :
उषा ऑफसेट प्रिंटर्स, नई, दिल्ली-2

© रणधीर प्रकाशन

SHREE MAHAKALI UPASANA
Translated by : Yogi Raj Yashpal Ji
Published By : Randhir Prakashan, Hardwar (INDIA)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विषय सूची

विषय का नाम *पृष्ठ संख्या*

१. काली पूजन यन्त्र ... ५
२. श्री काली ध्यान मन्त्र ... ६
३. श्री काली के सम्बन्ध में ... ७
४. श्री काली की उत्पत्ति ... ९
५. काली का अर्थ तत्व ... १६
६. श्री काली का स्वरूप ... १७
७. काली और उसके भेद ... १८
८. काली की महिमा ... १९
९. काली के सम्बन्ध में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का यथार्थ रूप ... २१
१०. श्री काली स्तुति ... २३
११. काली साधना मन्त्र ... २४
१२. मन्त्र की जप संख्या ... २५
१३. सामान्य पूजा विधि ... २७
१४. पूजन यन्त्र की निर्माण विधि ... ३४
१५. दक्षिण कालिका के मन्त्र ... ३५
१६. भद्रकाली–मन्त्र ... ३६
१७. श्मशानकाली–मन्त्र ... ३७

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१८. महाकाली–मन्त्र	...	३७
१९. काली गायत्री मन्त्र	...	३७
२०. गुह्यकाली के मन्त्र	...	३८
२१. ध्यान का स्वरूप	...	४१
२२. सुधाधारा काली स्तोत्र	...	४२
२३. श्री काली स्तवन	...	५१
२४. श्री कालिकाष्टक	...	५६
२५. कालिका सहस्रनाम स्तोत्र	...	६०
२६. श्री जगन्मङ्गल काली कवच	...	७५
२७. दक्षिण कालिका पटलम्	...	८१
२८. श्री काली शतनाम स्तोत्र	...	८६
२९. काली हृदयम्	...	८९
३०. महाकालप्रणीत काली कर्पूर स्तोत्रम्	...	९४
३१. काली अपराध क्षमापन स्तोत्रम्	...	९८
३२. रूद्रयामलोक्तं श्री काली कवच	...	१०२
३३. श्री काली चालीसा	...	१०६
३४. श्री कालीजी की आरती	...	१११

●●●

इस पुस्तक में दिए गए मन्त्र इत्यादि पाठकों के लाभ के लिए हैं। कोई दुर्मति अनुचित प्रयोग करे तो इसके लिए प्रकाशक या संग्रहकर्ता उत्तरदायी न होंगे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री काली पूजन यन्त्र

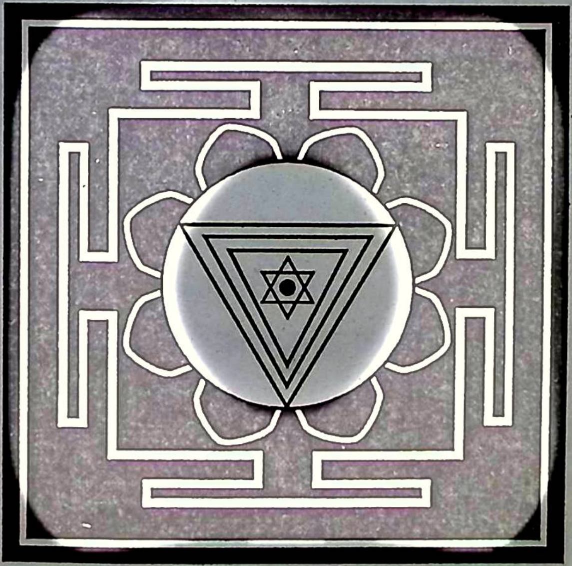

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री काली ध्यान मन्त्र

खंग चक्रगदेषु चाप परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शंखं संदधतीं करेस्त्रिनयनां सर्वांभूषातृताम।
नीलश्यामद्युतिमास्य पाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधु कैटभम्॥

खड्ग, चक्र, गदा, धनुष, बाण, परिघ, शूल, भुभुण्डि, कपाल और शंख को धारण करने वाली समस्त आभूषणों से सुसज्जित नीलमणि के समान कांतियुक्त, दशमुख, दशपाद वाली महाकाली का मैं ध्यान करता हूँ। जिसकी स्तुति विष्णु भगवान की योगनिद्रा से स्थित ब्रह्माजी ने स्वयं की थी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री काली के सम्बन्ध में

* मार्कण्डेय पुराण के सप्तशती खण्ड में जिन काली देवी का वर्णन है अथवा जिनका जन्म अम्बिका के ललाट से हुआ है वे काली श्री दुर्गा जी के स्वरूपों में से ही एक स्वरूप है तथा आद्या महाकाली से सर्वथा भिन्न है।
* भगवती आद्या काली अथवा दक्षिणा काली अनादिरूपा सारे चराचर की स्वामिनी हैं जबकि पौराणिक काली तमोगुण की स्वामिनी हैं।
* दक्षिण दिशा में रहने वाला अर्थात् सूर्य का पुत्र यम काली का नाम सुनते ही डरकर भाग जाता है तथा काली उपासकों को नरक में ले जाने की सामर्थ्य उसमें नहीं है इसलिए श्री काली को 'दक्षिणा काली' और 'दक्षिण कालिका' भी कहा जाता है।
* दस महाविद्याओं में काली सर्वप्रधान हैं। अतः इन्हें महाविद्या भी कहा जाता है।
* दक्षिणामूर्ति भैरव ने ही इनकी सर्वप्रथम आराधना की इसलिए भी इनका नाम दक्षिणा काली है।
* पुरुष को दक्षिण और नारी को वामा कहा जाता है। वही स्त्रीरूपी 'वामा' 'दक्षिण' पर विजय पाकर मोक्ष प्रदायिनी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बनी। इसलिए उन्हें तीनों लोकों में 'दक्षिणा' कहा जाता है।

* श्री काली की उपासना से समस्त विघ्न उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं जिस प्रकार प्रज्जवलित अग्नि में सभी पतंगे भस्म हो जाते हैं। काली स्तोत्रों का पाठ करने वाले साधक की वाणी गंगा के प्रवाह की भाँति गद्य-पद्यमयी हो जाती है और उसके दर्शन मात्र से ही प्रतिवादी लोग निष्प्रभ हो जाते हैं। उसके हाथ में सभी सिद्धियाँ बनी रहती हैं इसमें संदेह नहीं है।
* मार्गशीर्ष की कृष्णपक्ष की अष्टमी कालाष्टमी होती है जो उपासक इस दिन काली की सन्निधि में उपवास कर जागरण करते हैं, वे सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं।
* सात अँगुल से लेकर बाहर अँगुल तक की प्रतिमा घर पर रखने का शास्त्रों का मत है। किन्तु इससे अधिक परिमाण की मूर्ति मन्दिर के लिए उत्तम कही गई है।
* काली देवी की प्रतिष्ठा माघ और आश्विन मास में उत्तम तथा समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाली होती है। इन मासों में भी विशेष रूप से कृष्ण पक्ष में प्रतिष्ठा करना श्रेष्ठ माना गया है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

श्री काली की उत्पत्ति

श्री मार्कण्डेय पुराण में वर्णित देवी महात्म् अर्थात् दुर्गा सप्तशती के आठवें अध्याय के अनुसार श्री काली देवी की उत्पत्ति जगजननी अम्बिका के ललाट से हुई है। जिसकी कथा इस प्रकार है—

एक समय शुम्भ और निशुम्भ नामक दो महापराक्रमी असुरों ने अपने बाहुबल से देवराज इन्द्र को युद्ध में पराजित कर उनके सभी अधिकार छीन लिए। इसी प्रकार इन्द्र की तरह अन्य सभी देवताओं को निष्कासित किये जाने पर वह अपनी प्राण रक्षा के लिए इधर-उधर भटकने लगे।

इससे पूर्व भी जब महिषासुर नामक राक्षस ने इन्द्रपुरी पर अधिकार कर लिया था तो दुर्गा जी ने देवताओं के आह्वान पर महिषासुर का वध करके उन्हें यह वरदान दिया था कि भविष्य में जब कभी किसी कष्ट में देवता, देवी की सहायता चाहेंगे तो वह तुरन्त प्रकट होकर उनके दुःख दूर करेगी।

श्री दुर्गा जी के इसी आश्वासन का ध्यान कर सभी देवताओं ने मिलकर माता का आमन्त्रण किया तो उन्होंने प्रकट होकर शुम्भ और निःशुम्भ के दो शक्तिशाली दूत चण्ड को मुण्ड को युद्ध में मार डाला। जब चण्ड और मुण्ड महाअसुरों का देवी ने बहुत-सी सेना सहित संहार कर दिया तो असुरेश्वर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रतापी शुम्भ ने अत्यन्त क्रोध से अपनी सम्पूर्ण सेना को संग्राम के कूच कराने का आदेश दिया कि आज छियासी उदायुध असुर सेनापति और चौरासी कम्बु असुर सेनापति अपनी-अपनी सेना लेकर संग्राम को जायें। कोटिवीर्य नाम वाले असुरों के पचास कुल, धूम्रवंश में उत्पन्न हुए एक सौ कुल, कालक, दौर्हद, मौर्यवंशी तथा कालकेय वंशी असुर युद्ध में लड़ने के लिए मेरी आज्ञा से शीघ्र चले जाएँ। भयंकर शासक शुम्भ ऐसी आज्ञा देकर कई हजार महासेना को अपने साथ लेकर युद्ध को चल दिया।

असुरों की भयानक सेना को आता देखकर देवी ने अपने धनुष की टंकार से पृथ्वी और आकाश को गुँजा दिया। तदनन्तर सिंह ने भी भंयकर गर्जना की और चण्डिका ने अपना घण्टा बजाकर दूना शब्द कर दिया। इस प्रकार के शब्द को सुनकर सेना ने देवी, सिंह और चण्डिका को चारों ओर से घेर लिया। इसी समय दैत्यों का संहार करने तथा देवताओं का कष्ट निवारण करने के लिये ब्रह्मा, शंकर, स्वामि कार्तिकेय, विष्णु तथा इन्द्रादिक देवताओं के शरीर से जो शक्तियाँ उत्पन्न होकर आईं उनका वर्णन इस प्रकार है---

१. ब्रह्मा की शक्ति, रुद्राक्ष की माला धारण किए हुए, कमण्डल लेकर, हंस युक्त विमान में बैठकर आई। इसलिए शक्ति का नाम ब्रह्माणी हुआ।

२. शिवजी की शक्ति, वृषभ पर सवार होकर त्रिशूल को हाथ में लिए, महानाग का कंकण और चन्द्ररेखा से सुशोभित होकर आई।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३. स्वामि कार्तिकेय की शक्ति, उन्हीं के समान स्वरूप धारण करके, मोर पर बैठकर, शक्ति के लिए असुरों से युद्ध करने आई।

४. भगवान विष्णु की शक्ति, गरुड़ पर बैठकर, शंख, चक्र, गदा, शारंग धनुष और खड्ग हाथ में लिए वहाँ आई।

५. यज्ञवाराह की शक्ति, वाराही सुन्दर शरीर को धारण किए हुए आई।

६. नृसिंह भगवान की नारसिंही शक्ति उन्हीं के समान रूप धरकर वहाँ आई जिसके केश हिलने से ही सम्पूर्ण तारागण हिलने लगते थे।

७. इन्द्र की शक्ति, ऐन्द्री ऐरावत पर सवार होकर वज्र को लेकर युद्ध में आई। वह सहस्त्र नेत्रों वाली थी।

फिर महादेव जी ने सभी देव शक्तियों और महामाया देवी से कहा—तुम असुरों का विनाश करो और इसके साथ ही देवी के शरीर से अत्यन्त उग्र स्वरूप धारण करके चण्डिका प्रकट हुई। जिसकी गर्जना सैंकड़ों शेरों के समान थी। इस अपराजिता देवी ने शंकर जी से कहा कि आप मेरे दूत बनकर शुम्भ और निशुम्भ से जाकर कहो कि—'हे असुरों! यदि तुम जीवित रहना चाहते हो तो पाताल लोक में चले जाओ। त्रिलोकी का राज्य इन्द्र को दे दो। देवगणों को यज्ञ को भाग उपभोग करने दो और अगर अपने बल के घमण्ड से युद्ध करना चाहते हो तो मेरे आगे आ जाओ। मेरी योगनियाँ तुम्हारे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शरीरों का रक्तपान करके तृप्त होंगी।

भगवान शंकर से देवी की बातों को सुनकर असुर अत्यन्त क्रोधित हुए और जहाँ कात्यायनी देवी थीं, वहाँ उनके ऊपर बाण तथा अन्य शस्त्रों के प्रहार करने लगे। असुरों द्वारा चलाये गये बाण, शूल, फरसा आदि को देवी ने अपने बाणों से काट-काटकर खण्ड-खण्ड कर दिया। चण्डिका यह देखकर शत्रुओं को त्रिशूल से विदीर्ण करते हुए तथा खटवांग से कुचलने लगी। ब्रह्माणी देवी जहाँ जाती वहाँ अपने कमण्डल का जल छिड़ककर असुरों के बल, वीर्य और पराक्रम को नष्ट कर देतीं। वैष्णवी देवी ने चक्र से और कौमारी देवी ने शक्ति से शत्रुओं का विनाश आरम्भ कर दिया। ऐन्द्री के वज्र प्रहार से सैकड़ों दैत्य पृथ्वी पर खड़े-खड़े ही नष्ट हो जाते। वाराही देवी ने अनेक असुरों को अपनी विशाल दाढ़ों से फाड़ डाला। नारसिंही अपने नखों से शत्रुओं को चीर-चीरकर चबाते हुए घूम रही थी। शिवदूती* के विकट अट्टहास से व्याकुल होकर ही कितने असुर मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ते।

इस प्रकार के महाविनाश को देख असुर सेना भागने लगी। उनको इस प्रकार भागते देखकर उनका एक विशेष सेनापति रक्तबीज बड़े क्रोध से आगे आया। इस राक्षस के

* भगवती ने शिवजी को दूत बनाकर भेजा था इस कारण देवी का नाम शिवदूती भी प्रसिद्ध हुआ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शरीर से रक्त की एक बूंद पृथ्वी पर गिरते ही उसके समान बल वाला एक और राक्षस पैदा हो जाता था। रक्तबीज गदा लेकर ऐन्द्री देवी से लड़ने लगा। तब देवी ने वज्र से उस प्रहार किया। वज्रपात होते ही बहुत सा रक्त उसके शरीर से गिरा। उससे जितनी बूँद खून गिरा था उतनी ही संख्या में और रक्तबीज उत्पन्न हो गए। यह सब असुर एक क्षण में ही सारी रणभूमि पर फैलने लगे। अनेकों का सिर देवी अपने चक्र से एक ही बार में काट डालतीं। उनसे जो रक्त ही बूँदें गिरतीं उससे हजारों और रक्तबीज पैदा होते चले गये। इस बार वैष्णवी देवी ने बड़े क्रोध से चक्र छोड़ा तो कई हजार रक्तबीतों का सिर एक ही बार में कटकर गिरा तो उससे गिरे रक्त से अनगिनत रक्तबीज उत्पन्न हुए जिससे सम्पूर्ण विश्व ही व्याप्त हो गया। वाराही ने खड्ग से, कौमारी ने शक्ति से और माहेश्वरी ने त्रिशूल से उनको मारा। परन्तु महाअसुर रक्तबीज से उत्पन्न रक्तबीजों की संख्या घटने के बजाय बढ़ती ही रही।

देवताओं को यह देखकर भय हुआ जिससे वह दुःखी हो उठे। देवताओं को दुःखी देखकर चण्डिका को महाक्रोध आया। क्रोध के कारण देवी का मुँह काला पड़ गया तथा उनकी भौंहें टेढ़ी हो गई। उसी समय उनकी भौंहों के मध्य भाग (ललाट) से काली देवी प्रकट हुईं। तब चण्डी ने काली से कहा कि मैं इस महाबलशाली दैत्य पर प्रहार करूँ तो तुम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इसके रक्त को जमीन पर न गिरने देना। तब काली अपने रौद्र रूप में प्रकट होकर हाथ में खप्पर लेकर रक्तबीज के समस्त रक्त को उसमें समेटती रही। जब खप्पर भर जाता तो काली उसका पान कर लेती। जब चण्डी अनेकों राक्षसों को एक ही प्रहार में मारने लगी तो काली ने भी क्रोधोन्मत्त होकर अपनी जिह्वा सारी रणभूमि में फैला दी और रक्तबीज के शरीरों से गिरने वाले रक्त को भूमि पर जाने से पहले ही पी जाती। इस प्रकार शस्त्रों के प्रहार से घायल और रक्त रहित होकर रक्तबीज पृथ्वी पर गिर पड़ा। उस रक्तबीज के भूमि पर गिरते ही देवता अत्यन्त प्रसन्न हुए और मातृ शक्तियाँ और योगनियाँ उन महाअसुरों का रक्त पी-पीकर मदोन्मत्त होकर नृत्य करने लगीं।

श्री गुरु गोविन्द सिंह कृत चण्डी चरित्र में काली की उत्पत्ति और रक्तबीज वध का वर्णन इस प्रकार है—

सवैया

क्रुब्धकै युद्ध कियो बहु चण्डी न एतो कियो मधु सो अविनाशी।
दैत्यन के वध के कारण को निज भाल ते ज्वाल कि लाट निकासी॥
कालि प्रत्यक्ष भई तिह ते रण, फैलि रही भय वीर प्रभा-सी।
मानहु शृङ्ग सुमेरू को फोरिकै धार परी धर पै यमुना सी॥
मेरू हल्यो दहल्यो सुरलोक दशोदिशि भूधर भाजत भारी।
चाल परय्यो तब चौदह लोक में ब्रह्म भ्यो मन को भ्रम भारी॥
ध्यान रह्यो न जटी सु फटी धर यौं बलकैरण में किलकारी।
दैत्यन के वध कारण को कर काल सी काली कृपान संभारी॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दोहा—चंडी काली दुहूँ मिलि कीनो इहै विचार।
हौं हनहों तूं श्रोणी पी, अरिदल डारहिं मार॥

सवैया

काली और केहरि संग लै चंडि सु घेरे सभै वन जैसि दवा पै।
चंडि के वानन तेज प्रभाव ते दैत्य जरे जिमि ईंट अवा पै॥
कालिका श्रोण पियो तिनको कवि ने मन में लियो भाव भवा[१] पै।
मानहु सिन्धुकु नीर सभै मिलि धायकि जाय परय्यो हैं तवा[२] पै।
चंडि हने अरु कालिका कोपिकै शोणितबिन्दुन सों यह कीनो।
खग्ग संभार हकार तबै किलकार विदार सभै दल दीनो॥
आमिष शोण अचा बहु कालिका ता छवि को कवि यों मन चींनों।
मानु क्षुधातुर होय मनुष्य सु सालन[३] लासहि सो बहु पीनो[४]॥
युद्ध सु शोणित बीज कियो धरणी पर यौं सुर देखत सारे।
जेतक शोण कि बून्द गिरें उठि तेतक रूप अनेकहि धारे॥
योगिन आय फिरी चहूँ ओर ते शीश जटा कर खप्पर भारे।
शोणित बून्द परे अचवै सभ खग्ग ले चंडि प्रचंड संहारे॥
कालिरु चंड कुवंड सभाकै दैत्य सो युद्ध निशंक सजा है।
मार महारण मध्य भई पहरेक लौ सार सों सार बजा है॥
शोणितबिन्दु गिरा धरणी पर यौं असि सों अरि शीश भजा है। मानु
अतीत कियो चित्त को धनवन्त सभै निज माल तजा है॥

---

[१]भवानी। [२]वडवाग्नि के चक्र पर।
[३]सालन = सलोना लासा [४]शोरवे से मिलाकर पिया है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सोरठा

चंडि दियो विडार, शोण पान काली कियो।
क्षण महँ डारय्यो मार शोणबिन्दु दानव महा॥

काली का अर्थ तत्व

काली का शाब्दिक अर्थ है— **कालः**
अर्थात 'शिवः तस्य पत्नि काली।'
अथवा '**काली**' शिव की पत्नी का नाम है।

ये काली (भगवती) आदि अन्त रहित अजन्मा और पूरे चराचर विश्व की स्वामिनी है। ये काल को उत्पन्न करने वाली तथा स्वयं उसे भी खा जाने वाली है। साकार-उपासकों और साधकों की सुविधा के लिए तन्त्र आदि शास्त्रों में इन्हीं का निराकार काली के गुण ध्यान तथा स्वरूप आदि का वर्णन है।

पौराणिक काली (मार्कण्डेय पुराण या दुर्गा सप्तशती में वर्णित) जो अम्बिका के ललाट से उत्पन्न हुई इन आद्या काली से भिन्न हैं। वे श्री दुर्गा जी के स्वरूपों से एक स्वरूप है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री काली का स्वरूप

काली देवी का वर्णश्याम है जिसमें सभी रंग सन्निहित हैं। भक्तों के विकार-शून्य हृदय रूपी शमशान में उनका निवास है। भगवती चित्तशक्ति में समाहित प्राणशक्ति रूपी शव के आसन पर स्थित हैं। उनके ललाट पर अमृततत्व बोधक चन्द्रमा है और वे त्रिगुणातीत निर्विकार केशिनी हैं। सूर्य, चन्द्र और अग्नि ये तीनों उनके नेत्र हैं जिनसे वे तीनो कालों को देखती हैं। वे सतोगुण रूपी उज्जवल दाँतों से रजोगुण तमोगुण रूपी जीभ को दबाये हुए हैं। सारे संसार का पालन करने में सक्षम होने के कारण वे उन्नत पीनपयोधरा हैं। वे पचास मातृका अक्षरों की माला धारण करती हैं तथा मायारूपी आवरण से मुक्त हैं तथा सभी जीव मोक्ष न होने तक उनके आश्रित रहते हैं।

वे निष्काम भक्तों के मायारूपी पाश को ज्ञानरूपी तलवार से काट देती हैं। वे कालरूपी शक्ति को शक्ति देने वाली विराट् भवगती हैं।

इसके अतिरिक्त रक्तबीज मर्दिनी श्री काली का स्वरूप वर्णन इस प्रकार है—

सम्पूर्ण विकराल देह चमकते हुए काले रंग की है। उनकी बड़ी-बड़ी डरावनी आँखें और मुख से जीभ को बाहर निकाले हुए हैं, जो गहरे लाल रंग की है। वह नरमुण्डों की

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माला तथा कटे हुए हाथों का आसन धारण किये हुए हैं। उनके एक हाथ में खड्ग, दूसरे में त्रिशूल, तीसरे में खप्पर तथा चौथे हाथ से भक्तों को आशीर्वाद प्रदान करती हैं।

काली और उसके भेद

तन्त्र शास्त्रों में आद्या भगवती के दस मुख्य भेद कहे गये हैं—

१. काली	२. महाविद्या
३. षोड्शी	४. भुवनेश्वरी
५. भैरवी	६. छिन्नमस्ता
७. धूमावती	८. बगला
९. मातंगी	१०. कमलात्मिका।

यही/ दस महविद्याएँ भी हैं और यही तन्त्रों का गोपनीय तत्व भी है।

कालिका च महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा।
बगला सिद्ध विद्या च मातंगी कमलात्मिका।
एता दश महाविद्याः सर्व तन्त्रेषु गोपिता॥

परन्तु इन दसों विद्याओं में काली मुख्य मानी जाती हैं। काली के भी असंख्य तथा अनन्त भेद हैं। इनमें जो मुख्य आठ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भेद हैं वह निम्न प्रकार से हैं—

१. दक्षिणा काली। २. स्पर्शमणि काली। ३. संततिप्रदा काली। ४. सिद्धि काली। ५. चिंतामणि काली ६.कामकला काली। ७. हंस काली। ८. गुह्य काली।

इन आठों भेदों में प्रमुख दक्षिणा काली हैं। इसी को 'दक्षिण कालिका' या 'दक्षिणा कालिका' भी कहा जाता है। भगवती को दक्षिणा काली क्यों कहा जाता है इस बारे में निर्वाण तन्त्र कहता है—

दक्षिणस्यां दिशि स्थाने संस्थितश्च खेः सुतः।
काली नाम्ना पलायेत भीति युक्तः समन्ततः॥
अतः सा दक्षिणा काली त्रिषुलोकेशु गीयते॥

(दक्षिण दिशा में रहने वाला सूर्य का पुत्र यम काली का नाम सुनते ही डरकर भागता है अर्थात् वह काली के भक्तों को नरक में नहीं भेज सकता। इसीलिए काली को तीनों लोकों में दक्षिणा काली कहते हैं।)

काली की महिमा

१. देवी वरदान देने में बहुत चतुर हैं इसलिए उन्हें दक्षिणा कहा जाता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२. जिस प्रकार कार्य की समाप्ति पर दक्षिणा फल देने वाली होती है। उसी प्रकार देवी भी सभी फलों की सिद्धि को देती हैं।

३. दक्षिणामूर्ति भैरव ने उनकी सर्वप्रथम पूजा की इस कारण भी भगवती का नाम दक्षिणा काली है।

४. पुरुष को दक्षिण और शक्ति को 'वामा' कहा जाता है। वही वामा दक्षिण पर विजय पाकर महामोक्ष देने वाली बनी।

५. भगवती काली अनादिरूपा आद्या विद्या हैं। वे ब्रह्म स्वरुपिणी एवं कैवल्यदात्री हैं।

६. पाँचों तत्वों तक शक्ति तारा की स्थिति है और सबके अन्त में काली ही स्थित हैं। अर्थात् जब महाप्रलय में आकाश का भी लय हो जाता है। तब यही भगवती काली चित्तशक्ति के रूप में विद्यमान रहती हैं।

७. इन्हीं भगवती की वेद में भद्रकाली के रूप में स्तुति की गई है।

८. ये अजन्मा और निराकार स्वरूपा हैं। भावुक आराधक अपनी भावनाओं तथा देवी के गुण कर्मों के अनुरूप उनके काल्पनिक साकार रूप की स्तुति करते हैं। अपने ऐसे भक्तों को भगवती काली मुक्ति प्रदान करती हैं।

९. भगवती काली अपने उपासकों पर स्नेह रखने वाली तथा उनका कल्याण करने वाली हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१०. इस प्रकार भगवती की दक्षिणा काली के नाम से अनेकानेक उपलब्धियाँ हैं। जिस भक्त को जो भी उपलब्धि हो, या जो भी सिद्धि चाहे उसे उसी रूप में महाकाली को स्वीकार करना चाहिए।

श्री काली के सम्बन्ध में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का यथार्थ रूप

शमशानवासिनी—भगवती को शमशानवासिनी भी कहा गया है। शमशान का जो व्यवहारिक अर्थ होता है (जहाँ शव जलाये जाते हों) वह अर्थ यहाँ नहीं होता। शमशान का भाव इस प्रकार जानना चाहिए—

पंच महाभूत चिद्ब्रह्म में लय होते हैं। आद्याकाली चिद्ब्रह्म स्वरूपा हैं। लय होने के स्थान को शमशान कहा जाता है इस प्रकार जिस स्थान पर पंच महाभूत लय हों, वही शमशान है और भगवती वहीं निवास करती हैं।

सांसारिक काम, क्रोध रागादि जिस स्थान पर भस्म होते हैं वह भी शमशान है। इनके भस्म होने का स्थान मन है। जो मन, काम, क्रोध रागादि से रहित हो, उसी शमशान के समान मन में भगवती काली निवास करती है।

अतः काली के उपासकों को चाहिए कि वह अपने हृदय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

में काली को स्थापित करने से पूर्व उसे शमशान के समान अर्थात् समस्त रागों-से मुक्त बना लें।

शमशान में चिता—शमशान में चिता के जलाने का अर्थ है—हृदय में ज्ञानाग्नि का निरन्तर बने रहना। अतः साधक को अपने शमशानवत् हृदय में ज्ञानरूपी चिता को सदा जलाये रहना चाहिए।

भगवती का आसन—भगवती का आसन शव कहा गया है। इसका अर्थ यह है कि जब शिव से शक्ति अलग होती है तो 'शिव' शव रह जाता है। उस स्थिति में भगवती उसके ऊपर अपना आसन करती हैं अर्थात् उस पर अपनी कृपा करती हैं और उसे स्वयं में मिलाकर उसे भौतिक संसार से मुक्त कर देती हैं।

मुक्तकेशी—काली के बाल बिखरे हुए हैं—इसका आशय यह है कि भगवती केश-विन्यास आदि विलास के विकारों से मुक्त हैं।

त्रिनेत्रा—इसका अर्थ यह है कि सूर्य, चन्द्र और अग्नि ये तीनों ही भगवती के नेत्र स्वरूप हैं अथवा भगवती तीनों कालों भूत, भविष्य तथा वर्तमान को जानने वाली हैं।

बालावतंसा—काली ने अपने कानों में बालक का शव पहना है। इसका मतलब है कि वे बालस्वरूप निर्विकार साधक को अपने कानों के पास रखती हैं या बालक के समान सच्चे साधक के समीप ही उसके कान रहते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकटितरदना—श्री काली के दाँत बाहर निकले हैं और वे उनसे बाहर निकली जीभ को दबाये हैं—इसका आशय है कि भगवती रजोगुण तथा तमोगुण रूपी जीभ को सतोगुण रूपी उज्जवलता से दबाये हुए हैं।

पीनपयोधरा—श्री काली के स्तन बड़े तथा उन्नत हैं—अर्थात् भगवती तीनों लोकों को आधार देकर उनका पालन करती हैं अथवा वे अपने साधकों को अमरत्वरूपी दुग्ध पान कराती हैं।

नित्य यौवनवती—इसका आशय यह है कि देवी में अवस्था सम्बन्धी कोई परिवर्तन नहीं होता। वे नित्य हैं, अपरिवर्तनशील हैं।

करालवदना—काली का रूप भयानक है—इसका आशय है देवी का स्वरूप देखकर सामान्यजन भयभीत होते हैं। लकिन जिनके चित्त में देवी का वास है उनके डरने का कोई कारण नहीं। श्री काली के भक्त से काल भी भयभीत रहता है।

श्री काली स्तुति

या कालिका रोगहरा सुवंद्या वैश्यैः समस्तै व्यवहारदक्षैः।
जनैर्जनानां भयहारिणी च सा देवमाता मयि सौख्यदात्री॥ १॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

या माया प्रकृतिः शक्तिश्चण्डमुण्ड विमर्दिनी।
सा पूज्या सर्वदेवैश्च ह्यस्माकं वरदाभव॥ २॥
विश्वेश्वरी त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्याभवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः॥ ३॥
देवि प्रपन्नर्तिहरे प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरी पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥ ४॥
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापत्मनां कृतिधियां हृदयेषु बुद्धि।
श्रद्धां सतां कुलजन प्रभवश्य लज्जा
तां त्वां नताः स्मपरिपालय देवि विश्वम्॥ ५॥

काली साधना मन्त्र

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

दक्षिण कालिका का यह बाईस अक्षर का मन्त्र सब मन्त्रों में प्रधान माना गया है। इस मन्त्र के वर्णों का अर्थ इस प्रकार है—

जलरूपी 'ककार' मोक्ष को प्रदान करने वाला है तथा अग्नि रूपी 'रेफ' सर्वतेजोमयी है। '**क्रीं क्रीं क्रीं**—ये तीनों बीज सृष्टि, स्थिति एवं लय को करने वाले हैं।' '**बिन्दु**' निष्कल ब्रह्मरूप है, अतः कैवल्य फल को देने वाला है। 'हूं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हूं' ये दोनों बीज शब्दज्ञान को देने वाले हैं। '**ह्रीं ह्रीं**'—ये दोनों बीज सृष्टि, स्थिति एवं लय को करने वाले हैं। '**दक्षिण कालिके**'—इस सम्बोधन से देवी का सामीप्य प्राप्त होता है तथा '**स्वाहा**'—यह मन्त्र संसार का मातृ स्वरूप है तथा समस्त पापों को क्षय करने वाला है।

मन्त्र की जप संख्या

'काली तन्त्र' में इस मन्त्र के पुरश्चरण में दो लाख की संख्या में जप करने के लिए कहा गया है। उसमें बताया गया है कि साधक को पवित्र तथा हविष्याशी होकर दिन में एक लाख की संख्या में मन्त्र का जप करने चाहिए तथा रात्रि के समय मुँह में ताम्बूल रखकर तथा शय्या पर बैठकर एक लाख की संख्या में जप करना चाहिए। जप के पश्चात् दशांश घृत से होम करना चाहिए।

'स्वतन्त्र तन्त्र' में भी इस मन्त्र के दो लाख जप की व्यवस्था दी गई है तथा कहा गया है कि साधक को दिन के समय पवित्र तथा हविष्याशी होकर एक लाख की संख्या में जप करना चाहिए तथा हवि के द्वारा उसका दशांश होम करना चाहिए। एक लाख की संख्या में रात्रि के समय जप का विधान है।

'नील सारस्वत तन्त्र' में कहा गया है कि साधक को दिन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

में शुद्ध तथा हविष्याशी होकर एक लाख की संख्या में जप करना चाहिए। रात्रि में अशुद्ध भाव से एक लाख की संख्या में जप करके उसका दशांश होम, तर्पण तथा अभिषेक करना चाहिए।

जप होमादि के कार्य ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य के लिए दिन और शूद्र के लिए रात्रि का समय ठीक कहा गया है। अन्यान्य देवताओं के मन्त्र पुरश्चरण में दिन में ही जप करना चाहिए, रात्रि में नहीं और उस देवता के पुरश्चरण के अंगस्वरूप ब्राह्मण भोजन तथा हविष्यान्न द्वारा करना चाहिए।

'विश्वसार तन्त्र' में लिखा है कि जप का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण तथा तर्पण का दशांश अभिषेक करना चाहिए।

अभिषेक तथा तर्पण में तीर्थ का फल सन्निहित है। मधु अथवा शर्करा मिश्रित जल द्वारा कार्य करना उचित है तथा हविष्यान्न द्वारा अभिषेक का दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। तत्पश्चात् काली मन्त्र विशारद साधक को चाहिए कि वह गुरु को दक्षिणा देकर कार्य को सर्वाङ्ग सम्पूर्ण करे।

पश्वाचार विहित पुरश्चरण के विषय में उक्त बातें कही गई हैं। वीराचार-विहित प्रणाली संक्षेप में इस प्रकार है—

'विश्वसार तन्त्र' में कहा गया है कि वीराचार के साधक को दिन तथा रात्रि में एक लाख मन्त्र का जाप करना चाहिए।

'कुमारी कल्प' में कहा गया है कि हविष्याशी पवित्र साधक को दिन में एक लाख की संख्या में मन्त्र का जप करना

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चाहिए तथा रात्रि के समय मुंह में पान रखकर तथा शय्या पर बैठकर एक लाख की संख्या में पुनः जप करना चाहिए। इस प्रकार दो लाख की संख्या में जप पूरा हो जाने पर सावधान चित्त से होम करना चाहिए।

वीराचार-विहित प्रणाली का यथार्थ ज्ञान गुरु के द्वारा ही प्राप्त करना चाहिए। केवल पुस्तकों के द्वारा उसका ज्ञान होना कठिन तथा हानिकारक होता है।

सामान्य पूजा विधि

सर्वप्रथम सामान्य रूप से प्रातः कृत्यादि करके मन्त्र द्वारा आचमन करे। '**क्रीं**'—इस मन्त्र से तीन बार आचमनीय जल का पान करके—

ॐ काल्यै नमः।

ॐ कपाल्यै नमः।

इस मन्त्र से दोनों ओष्ठों का दो बार मार्जन करे। तदुपरान्त—

ॐ कुल्वायै नमः— इस मन्त्र से हस्त प्रलाक्षन करके **ॐ कुरु कुरु कुल्वायै नमः**—इस मन्त्र से मुख तथा **ॐ विरोधिन्यै नमः**—इस मन्त्र से दक्षिण कालिका, **ॐ विप्रचित्तायै नमः**—इस मन्त्र से वाम नासिका, **ॐ उग्रायै नमः**—इस मन्त्र से दक्षिण नेत्र, **ॐ उग्रप्रभायै नभः**—इस मन्त्र से वाम नेत्र, **ॐ दीप्तायै नमः**—इस मन्त्र से दक्षिण कर्ण, **ॐ नीलायै नमः**—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस मन्त्र से वाम कर्ण, **ॐ धनायै नमः**—इस मन्त्र से नाभि, **ॐ वलाकायै नमः**—इस मन्त्र से छाती, **ॐ मात्रायै नमः**—इस मन्त्र से मस्तक, **ॐ मुद्रायै नमः**—इस मन्त्र से दाएँ कन्धे तथा **ॐ नित्यायै नमः**—इस मन्त्र से बायें कन्धे का स्पर्श करे।

इस प्रकार आचमन करके सामान्य पूजा पद्धति के नियमानुसार भूत-शुद्धि तक सब कार्य करके माँ बीज **'ह्रीं'**—इस मन्त्र से यथाविधि प्राणायाम करे। तत्पश्चात ऋष्यादिन्यास करना चाहिए।

ऋष्यादिन्यास—ऋष्यादि न्यास की विधि इस प्रकार है—

ॐ अस्य मन्त्रस्य भैरव ऋषिरुष्णिक्छन्दो दक्षिण कालिका देवता ह्रीं बीजं हूं शक्तिः क्रीं कीलकं पुरुषार्थ सिद्धयर्थे विनियोगः।

'काली क्रम' में लिखा है—आदि बीज का कीलक चतुर्वर्ग के फल को देने वाला है। कीलक की विधि इस प्रकार है—

शिरसि भैरव ऋषये नमः
मुखे उष्णिक्छन्दसे नमः
हृदि दक्षिण कालिकायै देवतायै नमः
गुह्ये ह्रीं बीजाय नमः
पादयोः हूं शक्तये नमः
सर्वाङ्गे क्रीं कीलकायै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इसके उपरान्त करन्यास करना चाहिए। **'कालीतन्त्र'** में करन्यास के सम्बन्ध में यह लिखा गया है—

अङ्गन्यास करन्यासौ यथावदभिधीयते।
भैरवोऽस्य ऋषिः प्रोक्त उष्णिक्छन्द उपाहृतम्॥
देवता कालिका प्रोक्ता लज्जाबीजं तु बीजकम्।
कीलकं चाद्य बीजंस्याच्चुतुर्वर्ग फलप्रदम्॥
शक्तिश्च कूर्चवीस्यादनिरुद्धा । सरस्वती।
कवित्वार्थो विनियोग स्यादि त्यादि केन मायया॥
षड्दीर्घ मात्रा बीजेन प्रणवाद्येन कल्प।

कराङ्गन्यास की विधि—'वीरतन्त्र' में करङ्गन्यास की विधि इस प्रकार बताई गई है—

ॐ ह्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्।
ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां हुं।
ॐ ह्रैं कनिष्ठाभ्यां वोषट्।
ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

इस प्रकार करन्यास करके **ॐ हृदयाय नमः**—इत्यादि क्रम से अङ्गन्यास करना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथवा—

ॐ क्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां वषट्।
ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां हुं।
ॐ क्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्।
ॐ क्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्।

इस क्रम से '**क्र**' वर्ण में दीर्घस्वर मिलाकर कराङ्गन्यास करना चाहिए।

वर्णन्यास—कराङ्गन्यास के पश्चात् वर्णन्यास करना चाहिए। वर्णन्यास की विधि इस प्रकार कही गई है—

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं नमः इतिहृदये।
एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं धं नमः इति दक्षिण बाहौ।
ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमः इति वाम बाहौ।
णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नमः इति दक्षिण पादे।
मं यं रं लं वं शं षं स ह क्षं नमः इति वाम पादे।

'**विरुपाक्ष**' के मत से सबिन्दु रीति (अर्थात् अं आं आदि) से वर्णन्यास करना चाहिए तथा 'काली तन्त्र' के अनुसार निर्बिन्दु रीति (अर्थात् अ आ आदि) से वर्णन्यास करना चाहिए परन्तु चाहे सबिन्दु-न्यास किया जाय अथवा निर्बिन्दु किया जाय-दोनों ही युक्तिसंगत हैं। अस्तु जैसी इच्छा हो, उसी के अनुसार वर्णन्यास करना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

षोढान्यास—वर्णन्यास के उपरांत षोढान्यास करना चाहिए। '**वीरतन्त्र**' में लिखा है—

पहले केवल मातृकान्यास करे, फिर दुबारा समस्त मातृका वर्गों को '**ॐ**' इस मन्त्र से पुटित करके मातृकान्यास के स्थान में न्यास करे तथा मातृकावर्ण द्वारा '**ॐ**'—इस मन्त्र को पुटित करके न्यास करे। यथा—

ललाट में—ॐ अं ॐ नमः।
मुख में—ॐ आं ॐ नमः। इत्यादि।
ललाट में—अं ॐ अं नमः।
मुख में—आं ॐ आं नमः। इत्यादि।

तत्पश्चात् **श्रीं** बीज **श्रीं** वर्ण द्वारा समस्त मातृकावर्णों को पुटित करके उसी तरह मातृकान्यासोक्त स्थान में न्यास करे तथा समस्त मातृकावर्णों द्वारा इस 'श्रीं बीज' को पुटित करके पूर्ववत् न्यास करे। यथा—

ललाट में—श्रीं अं श्रीं नमः।
मुख में—श्रीं आं श्रीं नमः॥ इत्यादि।
ललाट में—अं श्रीं अं नमः।
मुख में—आं श्रीं आं नमः। इत्यादि।

तदुपरान्त काम बीज **क्लीं** के द्वारा समस्त मातृकावर्णों को पुटित करके मातृकान्यास के स्थान में तथा मातूकावर्ण द्वारा काम बीज **क्लीं** को पुटित करके पूर्ववत् न्यास करना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यथा—

ललाट में—क्लीं अं क्लीं नमः।
मुख में—क्लीं आं क्लीं नमः। इत्यादि।
ललाट में—अं क्लीं अं नमः।
मुख में—आं क्लीं आं नमः। इत्यादि।

इसी प्रकार शक्ति बीज '**ह्रीं**' द्वारा समस्त मातृका वर्णों को पुटित करके मातृका वर्ण द्वारा '**ह्रीं**'—इस बीज को पुटित करके सब स्थानों में न्यास करना चाहिए। यथा—

ललाट में—ह्रीं अं ह्रीं नमः।
मुख में—ह्रीं आं ह्रीं नमः। इत्यादि।
ललाट में—अं ह्रीं अं नमः।
मुख में—'आं ह्रीं आं नमः।' इत्यादि।

इसके पश्चात् ललाट में '**क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृं ॡं क्रीं क्रीं नमः**' इत्यादि तथा ललाट में '**ऋं ऋं लृं ॡं क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृं ॡं नमः**' इत्यादि क्रम से मातृका स्थान में न्यास करना चाहिए।

इसके उपरान्त मूलमन्त्र द्वारा मातृकावर्ण को पुटित करके तथा मातृकावर्ण द्वारा मूलमन्त्र को पुटित करके पूर्वोक्त स्थान में न्यास करना चाहिए। यथा—

ललाट में—क्रीं अं क्रीं नमः।
मुख में—क्रीं आं क्रीं नमः। इत्यादि।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इसी प्रकार अनुलोम तथा विलोमन्यास करके मूलमन्त्र द्वारा १०८ बार '**व्यापक न्यास**' करना चाहिए। इस तरह से 'षोढान्यास' करने पर समस्त पाप क्षय हो जाते हैं।

तत्त्वन्यास—षोढान्यास के पश्चात् 'तत्त्वन्यास' करना चाहिए। उसकी विधि इस प्रकार है—

पूर्वोक्त बाईस अक्षर वाले मन्त्र को तीन भागों में बाँट दे। पहले खण्ड में सात अक्षर, दूसरे खण्ड में छः अक्षर तथा तीसरे खण्ड में नौ अक्षर होने चाहिए।

पहले खण्ड के अन्त में **ॐ आत्मतत्त्वाय स्वाहा।**

दूसरे खण्ड में अन्त में **ॐ विद्यातत्त्वाय स्वाहा।**

तीसरे खण्ड के अन्त में **ॐ शिवतत्त्वाय स्वाहा।**

कहकर न्यास करना चाहिए। यथा—

'क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं ॐ आत्मतत्त्वाय स्वाहा।'

इस मन्त्र द्वारा चरणों में नाभि पर्यन्त—

दक्षिणे कालिके ॐ विद्यातत्त्वाय स्वाहा।

इस मन्त्र द्वारा नाभि से हृदय पर्यन्त तथा—

'क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॐ शिवतत्त्वाय स्वाहा'—

इस मन्त्र द्वारा हृदय से मस्तक पर्यन्त न्यास करना चाहिए।

बीजन्यास—तत्त्वन्यास के पश्चात् बीजन्यास करना चाहिए। यथा—

ब्रह्मरन्ध्र में—क्रीं नमः।

भ्रू मध्य में—ह्रीं नमः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ललाट में—क्रीं नमः।

नाभि में—हुं नमः।

गुह्य में—हुं नमः।

मुख में—ह्रीं नमः।

सर्वाङ्ग में—ह्रीं नम।

पूर्वोक्त षोढान्यास, तत्त्वन्यास तथा बीजन्यास—ये तीनों न्यास **'काम्य'** हैं अर्थात् नित्य पूजा में इन तीनों न्यासों को बिना किए भी पूजा अंगहीन नहीं होती।

पूजन-यन्त्र की निर्माण विधि

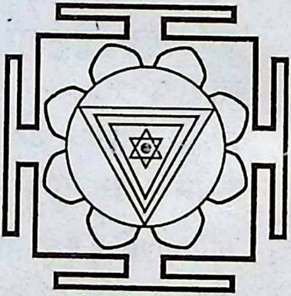

श्री काली पूजन यन्त्र

'पूजा-यन्त्र' की निर्माण विधि इस प्रकार कही गई—

पहले बिन्दु ॐ, फिर निज बिन्दु क्रीं, फिर भुवनेश्वरी बीज ह्रीं, लिखकर उसके बाहर एक त्रिकोण अंकित करना चाहिए। फिर उस त्रिकोण के बाहर क्रमशः चार अन्य त्रिकोण अंकित करके एक वृत्त, फिर अष्टदल पद्म तथा पुनर्वार वृत्त अंकित करना चाहिए उसके बाहर चतुस्त्रद्वार अंकित करके यन्त्र को पूर्ण रूप देना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उक्त विधि से जो यन्त्र निर्मित होता है, उसके स्वरूप को बड़े आकार में इसी पुस्तक में काली-पूजन-यन्त्र पृष्ठ ५ पर देखें (इसे काटकर प्रयोग में भी ला सकते हैं।)

दक्षिण कालिका के मन्त्र

'क्रीं'—यह एकाक्षर मन्त्र समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला है।

'ह्रीं'—यह दूसरा एकाक्षर मन्त्र है। इस मन्त्र द्वारा देवी की आराधना करने पर सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त होता है।

पूजा की विधि—उक्त मन्त्रों की पूजा-प्रणाली इस प्रकार बताई गई है—

सर्वप्रथम सामान्य-विधि के अनुसार प्रातः कृत्यादि से प्राणायाम तक सब कार्य करके पूर्वोक्त ऋष्यादिन्यास, वर्णन्यास तथा कराङ्गन्यास करे। इन दोनों के कराङ्गन्यास की विधि यह है—

ॐ क्रां अगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ क्रां हृदयाय नमः। इत्यादि।
ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
अं ह्रीं हृदयाय नमः। इत्यादि।

इस पूजा के अन्यान्य सभी कार्य पूर्वोक्त रीति के अनुसार करना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्यान का स्वरूप—एकाक्षर मन्त्र के विषय में 'सिद्धेश्वर तन्त्र' में ध्यान का स्वरूप इस प्रकार कहा गया है—

शवारूढ़ा महाभीमां घोरदंष्ट्रां वरप्रदाम्।
हास्य युक्तां त्रिनेत्रां च कपाल कर्त्तुका कराम्॥
मुक्तकेशीं ललज्जिह्वां पिंबतीं रुधिरं मुहुः।
चतुर्बाहुयुतां देवीं भयाभयकरां स्मरेत्॥

पुरश्चरण की विधि—उक्त एकाक्षर मन्त्रों का जप एक लाख की संख्या में करने के लिए कहा गया है। उक्त मन्त्रों के पुरश्चरण के सम्बन्ध में सिद्धेश्वर तन्त्र में लिखा है कि देवी का यथाविधि ध्यान करके एक लाख की संख्या में मंत्र का जप करे तथा विधानानुसार जप का दशाँश होम करे।

'कुल चूड़ामणि' ग्रन्थ में लिखा है कि हविष्याशी साधक को दिन के समय पवित्र होकर एक लाख की संख्या में मन्त्र का जप करना चाहिए तथा रात्रि में भी इसी प्रकार एक लाख की संख्या में जप करना चाहिए। रात्रि-काल में जप करने से दक्षिण कालिका देवी मंत्र की सिद्धि प्रदान करती हैं।

भद्रकाली-मन्त्र

अब भद्रकाली के मन्त्र का वर्णन किया जाता है। वह इस प्रकार है—

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं भद्रकाल्यै क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यह बीस वर्ण वाला भ्रदकाली का मन्त्र साधक को चतुर्वर्ग फल प्रदान करता है।

श्मशान काली-मन्त्र

इस श्मशान काली के मन्त्र का वर्णन किया जाता है। वह इस प्रकार है—

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं श्मशान काली क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

इस इक्कीस अक्षर के मन्त्र से श्मशान काली की पूजा करनी चाहिए। यह भी चतुर्वर्गदायक है।

महाकाली-मन्त्र

अब महाकाली के मन्त्र का वर्णन किया जाता है। वह इस प्रकार है—

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं महाकाली क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

इस बीस अक्षर के मन्त्र द्वारा महाकाली का पूजन करना चाहिए। यह भी चतुर्वर्गफलदायक है।

काली गायत्री मन्त्र

ॐ कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि तन्नो घोरे प्रचोदयात्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूजन विधि—इन देवियों में पूजन में यह विशेषता है कि यन्त्र के भूपुर में इन्द्रादि दिक्पाल तथा वज्रादि अस्त्र, भूपुर के चतुर्द्वार में विष्णु, शिव, सूर्य और गणेश; भूगृह में लोकपाल, बाह्य में देवी के अस्त्र तथा भूपुर के चारों ओर पूर्वादि क्रम से विष्णु, शिव, सूर्य और गणेश का पूजन करना चाहिए।

इसी प्रकार यन्त्र में ही गुह्यकाली, भद्रकाली, श्मशान काली—इन चारों देवियों का पूजन करना चाहिए। इनका यन्त्र सम्बन्धी कोई भेद नहीं है। सबके यन्त्र एक समान हैं। इनके यन्त्र का स्वरूप नीचे बताया गया है।

यन्त्र का स्वरूप—उक्त चारों देवियों में यन्त्र को अंकित करने की विधि यह है कि पहले त्रिकोण, फिर षट्कोण तथा नवकोण अंकित करके उसके बाहर तीन वृत्त तथा केशर सहित अष्टदल पद्म अंकित करे। फिर तीन भूपुर वाला एक चतुरस्त्रद्वार संयुक्त योनि मण्डल का स्वरूप अंकित करना चाहिए। यह '**त्रिपञ्चार यन्त्र**' सब यन्त्रों से प्रसिद्ध है।

गुह्य काली के मन्त्र

अब '**गुह्यकाली**' के मन्त्र तथा पूजा-प्रणाली का वर्णन किया जाता है। यह महाविद्या त्रिभुवन में अत्यन्त दुर्लभ तथा धर्मार्थ काम मोक्ष को देने वाली, महापापों को नष्ट करने वाली,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समस्त सिद्धियों की प्रदाता, सनातनी तथा भोग को देने वाली प्रसिद्ध है।

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

नाम-भेद से यह मन्त्र गुह्यकाली तथा दक्षिणा काली दोनों की ही आराधना में प्रयुक्त होता है। यह मन्त्र समस्त सिद्धियों को देने वाला है।

गुह्यकाली के अन्य मन्त्र इस प्रकार हैं—

क्रीं हूं ह्रीं गुह्य कालिके क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

इस षोडशाक्षर मन्त्र द्वारा आराधना करने पर साधक को चतुर्वर्ग की प्राप्ति होती है।

क्रीं हूं ह्रीं गुह्ये कालिके हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

यह चतुर्दशाक्षर मन्त्र सब तन्त्रों में गुप्त है। इस मन्त्र में '**गुह्ये**' के स्थान पर '**दक्षिणे**' पद जोड़ने से पंचदशाक्षरी दक्षिण कालिका का मन्त्र होता है। यथा—

क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणे कालिके हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

गुह्यकाली का चतुर्दशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है—

हूं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

गुह्य काली का नवाक्षर मन्त्र इस प्रकार है—

क्रीं गुह्ये कालिके क्रीं स्वाहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इसी मन्त्र में '**गुह्ये**' के स्थान पर दक्षिणे शब्द जोड़ने पर दक्षिणा कालिका का दशाक्षर मन्त्र बनता है। यथा—

क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं स्वाहा।

इन सब मन्त्रों की साधना में दक्षिण कालिका की पूजा-पद्धति में लिखे नियमानुसार न्यासादि करके पूजा तथा बलि करनी चाहिए। इसके बलिदान में यह विशेषता है कि पूर्व नियमानुसार बलि उत्सर्ग करके निम्नलिखित मन्त्र द्वारा बलि को निवेदित करना चाहिए—

ऐं ह्रीं ऐह्येहि जगन्मातर्जगतां जननि गृहण बलिं सिद्धिं देहि देहि शत्रु क्षयं कुरु कुरु हूं हूं ह्रीं ह्रीं फट् ॐ कालिकायै नमः फट् स्वाहा।

यदि गुह्यकाली के लिए बलि निवेदित करनी हो तो इस मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए—

ऐह्येहि गुह्य कालिके मम बलिं गृह्ण गृह्ण मम शत्रुन नाशय नाशय खादय स्फुर स्फुर छिन्धि छिन्धि सिद्धिं देहि हूं फट् स्वाहा।

आसन का मन्त्र भी अन्य प्रकार से है। यथा—

ॐ सदाशिव महाप्रेताय गुह्य कल्पासनाय नमः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्यान का स्वरूप

महामेघ प्रभां देवीं कृष्ण वस्मोमिधारिणीम्।
ललजिज्ह्वां घोरदष्ट्रां कोटराक्षीं हसन्मुखीम॥
नागहार लतोपेतां चन्द्रार्द्धकृत शेखराम्।
द्यां लिखन्तीं ज़टामेकां लेलिहानासवं प्रिवम्॥
नाग यज्ञोपवीताङ्गी नाग शय्या निषेदुषीम्।
पञ्चाशन्मुण्डसंयुक्त वनमाला महोदरीम्॥
सहस्त्रफण संयुक्तंमनन्तं शिरसोपरि।
चतुर्दिक्षु नागफणा वेष्टितं गुह्यकालिकाम्॥
तक्षक सर्पराजेन वामकगण भूषिताम्।
अनन्त नागराजेन कृतदक्षिण कंकणम्॥
नागेन रसनाहार कल्पितां रत्न नूपुराम्।
वामेन शिव स्वरूपं तत् कल्पं वत्सरूपकम्॥
द्विभुजां चिन्तयेद्देवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्।
नरदेह समाबद्ध कुण्डल श्रुति मण्डिताम्॥
प्रसन्न वदनां सौम्यां नवरत्न विभूषिताम्।
नारदाद्यैर्मुनिगणैः सेवितां शिवमोहिनीम्॥
अट्टहासां महाभीमां साधकाभीष्ट दायिनीम्।
द्यां लिखंतीं जटामेक इतिध्यायत्ती मिति शेषः॥

भावार्थ—देवी का वर्ण सघन मेघ के समान काला है। उनके वस्त्र भी कृष्ण वर्ण के हैं। उनकी जीभ लाल है तथा दाँत अत्यन्त भयंकर हैं। उनके दोनों नेत्र कोटर में घुसे हुए हैं। मुख

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हास्यपूर्ण है। उनके कण्ठ में नागहार, कपाल में अर्द्धचन्द्र तथा मस्तक पर आकाशगामिनी जटा विद्यमान है। उनके गले में पचास मुण्ड संयुक्त वनमाला है। उनका उदर बहुत बड़ा है तथा मस्तक पर सहस्त्रफणधारी अनंत नागराज हैं। कालिका देवी चारों ओर से वेष्टिता हैं। वे नागराज तक्षक द्वारा वामकङ्कण, अनन्तनाग द्वारा दक्षिण कङ्कण, नाग निर्मित करधनी तथा रत्नजटित पायजेब धारण किये हुए हैं। उनके वामभाग में शिवस्वरूप कल्पित वत्स हैं। देवी की दो भुजाएँ हैं। वे अपने दोनों कानों में नरदेहयुक्त कुण्डलों को धारण किये हुए हैं। उनका मुख प्रसन्न है तथा आकृति सौम्य है। उन नवरत्न विभूषिता शिवमोहिनी देवी की नारद आदि मुनिगण सेवा कर रहे हैं। वे अट्टाहास युक्त महाभयकारी देवी साधकों को अभीप्सित फल प्रदान करने वाली हैं।

महाकाल रुद्र विरचित
सुधाधारा काली स्तोत्र

ओ३म अचिन्त्यामिताकारशक्तिस्वरूपा
प्रतिव्यक्तधिष्ठानसत्वैक मूर्तिः।
गुणातीत निर्द्वन्द्वबोधैकगम्या,
त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भावार्थ—हे माता! तुम्हारे आकार, शक्ति और स्वरूप का परिमाण करने में कोई भी समर्थ नहीं है, वह अचिन्तनीय है। तुम प्रत्येक व्यक्ति में सत्व रूप में अधिष्ठित हो। तुम तीनों गुणों से परे, अद्वैतज्ञान से प्राप्त होने वाली तथा परब्रह्मरूप में ही सिद्ध हो।

अगोत्रा कृतित्वादनैकान्तिकत्वादलक्ष्यागमत्वादशेषाकरत्वात्।
प्रपंचालसत्वाद्नारम्भकत्वात् त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा॥

भावार्थ—तुम गोत्र से रहित और आकार से रहित हो। तुम अस्थिर हो, तुम्हारी गति को लक्ष्य करने में कोई समर्थ नहीं है। तुम अखिल वस्तु की आकार हो, जगत् प्रपञ्च में तुम्हारा विकास नहीं है। तुम परब्रह्मरूप में ही सिद्ध हो।

असाधारणत्वादसम्बन्धकत्वादभिन्नाश्रयत्वादनाकारकत्वात् ।
अविद्यात्मकत्वादनाद्यन्तकत्वात् त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा॥

भावार्थ—तुम सामान्य पदार्थों से भिन्न हो, तुम सबसे असम्बद्ध हो, साथ ही कोई भी पदार्थ तुमसे पृथक नहीं है। तुम निराकार, अविद्यारूप वाली, अनादि तथा अनन्त हो। तुम ब्रह्मरूप में ही सिद्ध हो।

यदा नैव धाता न विष्णुर्नरुद्रो, न कालो न वा पंचभूतानि नाशा।
तदा कारणीभूत सत्वैकमूर्ति स्तवमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा॥

भावार्थ—जब ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, काल, पंचभूत तथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिक् कुछ भी नहीं थे, तब तुम्हीं सबके कारण रूप में सत्वमूर्ति से विद्यमान थीं। तुम परब्रह्मरूप में ही सिद्ध हो।

न मीमांसका नैव कालादितर्का न सांख्या न योगा न वेदान्तवेदाः।
न देवा विदुस्ते निराकारभावं त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा॥

भावार्थ—तुम मीमांसकों से अविदित हो, काल, तर्क, साँख्य, योग, वेदान्त, वेद तथा देवतागण भी तुम्हारे निराकार रूप का वर्णन कर पाने में समर्थ नहीं है। तुम ब्रह्मरूप में ही सिद्ध हो।

न ते नामगोत्रे न ते जन्म मृत्यु न ते धामचेष्टे न ते दुःख सौख्ये।
न ते मित्र शत्रू न ते बन्ध मोक्षौ त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा॥

भावार्थ—न तुम्हारा कोई नाम है, न गोत्र है, न जन्म है, न मृत्यु है, न घर है, न चेष्टाएँ हैं, न दुःख सुख हैं, न मित्र-शत्रु हैं और न बन्धन-मोक्ष ही है। तुम परब्रह्मरूप में ही सिद्ध हो।

न बाला न च त्वं वयस्का न वृद्धा
न च स्त्री द षण्ठः पुमान्नैव च त्वम्।
न च त्वं सुरो नासुरो नो नरो वा
त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा॥

भावार्थ—न तुम बाला हो, न वयस्का हो, न वृद्धा हो, न स्त्री हो, न नपुंसक हो और न पुरुष ही हो। न तुम देवता हो, न असुर हो और न मनुष्य हो। तुम परब्रह्मरूप में ही सिद्ध हो।

जले शीतलत्वं शुचौदाहकत्व विधौ निर्मलत्वं रवौ तापकत्वम्।
तवैवाम्बिके यस्य कस्यापि शक्तिस्त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भावार्थ—हे अम्बिके! जल में शीतलता, अग्नि में दाहकता, चन्द्रमा में निर्मलता तथा रवि में तप्तता के रूप में तुम्हीं हो। तुम्हीं सब पदार्थों की शक्ति हो। तुम परब्रह्मरूप में ही सिद्ध हो।

पपौक्ष्वेडमुग्रं पुरा यन्महेशः पुनः संहरत्यन्तकाजे जगच्च।
तवैव प्रसादान्न च स्वस्य शक्त्या त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा॥

भावार्थ—पूर्वकाल में महादेव जी ने जो हलाहल विष का पान किया था तथा प्रलय काल में वे जो संसार का संहार-कार्य करते रहे, वे सब तुम्हारी प्रसन्नता से ही करते हैं, अपनी सामर्थ्य से नहीं करते। तुम परब्रह्मरूप में ही सिद्ध हो।

करालाकृती न्याननानि श्रयन्ती भजंती करास्त्रादि बाहुल्य मित्थम्।
जगत्पालनाया सुराणां बधाय त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा॥

भावार्थ—तुम विश्व का पालन तथा असुरों का संहार करने के लिए हाथ में अस्त्र-शस्त्र लिए रहती हो। तुम कराल वदना हो। तुम परब्रह्मरूप में ही सिद्ध हो।

रुवन्ती शिवाभिर्वहन्ती कपालं जयन्ती सुरारीन् बधन्ती प्रसन्ना।
नटन्ती पतन्ती चलन्ती हसन्ती त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा॥

भावार्थ—तुम महाचण्ड योगेश्वरी, गुह्यकाली, कराली महाडायनी, अट्टहास करने वाली, ब्रह्माण्ड को उद्भासित करने वाली, चण्डिकामूर्ति तथा सबका पालन करनेवाली हो। तुम परब्रह्मरूप में ही सिद्ध हो।

अपादापि वाताधिकं धावसि त्व
श्रुतिभ्यां विहीनापि शब्दं शृणोषि।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनासापि जिघ्रस्य नेत्रापि
पश्यस्वजिह्वापि नानारसास्वाद विज्ञा॥

भावार्थ—तुम शिवामूर्ति से विकट-शब्द करने वाली, कपाल को धारण करने वाली, देव-शत्रुओं का वध करने वाली, प्रसन्न रहने वाली, नृत्य करने वाली तथा गिरते और चलते हुए हँसने वाली हो। तुम परब्रह्मरूप में ही सिद्ध हो।

यथाबिम्बमेकं रवेरम्बरस्थं प्रतिछाच्यया यावदेकोदकेषु।
समुद्भासतेऽनेकरूप यथावत् त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा॥

भावार्थ—तुम पद-विहीन होने पर भी वायु-वेग से भी अधिक वेग से दौड़ने वाली, कर्ण-विहीन होने पर भी सब शब्दों को सुनने वाली, नासिका-विहीन होने पर भी सब पदार्थों की गन्ध लेने वाली, नेत्र-विहीन होने पर भी सबको देखने वाली तथा जिह्वा-विहीन होने पर भी विभिन्न रसों का आस्वादन करने वाली हो।

यथा भ्रामयित्वा मृदा चक्र मध्ये कुलाली विधते शरावं घटं च।
महामोह यन्त्रेषु भूतान्यशेषान् तथा मानुषस्त्वं सृजस्यादि सर्गे॥

भावार्थ—जिस प्रकार एक ही सूर्य बिम्ब की छाया जल प्रतिबिम्ब होकर विभिन्न जलाशयों में अनेक रूप वाली प्रतीत होती है, उसी प्रकार तुम भी एक होकर भी अनेक रूपों में प्रतिभासित होती हो। तुम परब्रह्म में ही सिद्ध हो।

यथा रङ्गरज्वर्कदृष्टिष्वकस्मान्नृणां रूपदर्वीकराम्बुभ्रमः स्यात्।
जगत्यत्र तत्तन्मये तद्वदेव त्वमेकैव तत्तन्नितत्तौ समस्तम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भावार्थ—जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी को चाक पर घुमाकर उसके द्वारा सकोरे घट आदि विभिन्न वस्तुएँ बनाता है, उसी प्रकार तुम भी सृष्टि के प्रारम्भिक काल में पंचमहाभूतों को महामोहयंत्र में घुमाकर अनेक प्रकार के मनुष्यों की सृष्टि करती हो।

महाज्योति एकार सिंहासनंवत्त्वकीयान् सुरान् वाह्यस्युग्रमूर्ते।
अवष्टभ्य पदभ्यां शिवं भैरवं च स्थिता तेन मध्ये भवत्येव मुख्या॥

भावार्थ—जिस प्रकार मनुष्य को रांगे में चाँदी का, रस्सी में साँप का तथा सूर्य-किरणों में जल का भ्रम हो जाता है उसी प्रकार इस संसार में भी एकमात्र तुम्हीं हो और तुम्हीं में प्रत्येक वस्तु का भ्रम होता रहता है। उन सब भ्रमयुक्त वस्तुओं का अवसान होने पर एकमात्र तुम्हीं विद्यमान रहती हो।

कुयोगासने योगमुद्राभिनीतिः कुगोसायुपोतस्य वालाननं च।
जगन्मातरादृक् तवापूर्वलीला कर्थकारमस्मद्विधैर्देवि गम्या॥

भावार्थ—तुम्ही देवताओं को महाज्योतिमय सिंहासन पर बैठाने वाली हो और तुम्हीं उग्रमूर्ति धारण कर शिव भैरव को अपने दोनों पांवों में दबाकर अपूर्वरूप से शोभित होती हो।

विशुद्धपरां चिन्मयी स्वप्रकाशामृतानन्दरूपा जगदद्व्यापिका च।
तवेद्दग्विधा या निजाकार मूर्तिः किमस्माभिरन्तर्हृदि ध्यायितव्या॥

भावार्थ—हे जगन्माता! कुयोगासन पर योगमुद्रा का अभिनय तथा कुत्सित शृगाल शावकों के क्षुद्रमुण्ड—ये सब

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुम्हारी अपूर्व लीलायें हैं। वे मुझ जैसे व्यक्ति की समझ में किस प्रकार आ सकती हैं।

महाघोर कालानल ज्वालाज्वाला-
हित्यत्यन्तवासा महाट्टाट्टहासा।
जटाभारकाला महामुण्डमाला
विशाला त्वमीड्य मयाध्यायशऽम्ब॥

भावार्थ—तुम विशुद्धा, परा, चिन्मयी, स्वप्रकाश्य, अमृतानन्दरूप तथा जगद्व्यापिनी हो। तुम्हारा ऐसा जो अपना रूप है उसका ध्यान हम अपने हृदय से किस प्रकार करें?

तपौ नैव कुर्वन् वपुः सदयामि ब्रजन्नापि तीर्थ पदे खञ्जयामि।
पठन्नापि वेदान् चनिं यापयामि त्वदंघ्रिद्वयं मङ्गलं साधयामि॥

भावार्थ—हे अम्बा! तुम महाघोर कालानल की शिखा के मध्य में महान् अट्टहास करती हुई जटाधारिणी, कृष्णवर्णा, मुण्डमाला धारण किये विशाल मूर्ति के रूप में स्थित हो। मैं तुम्हारे इसी स्वरूप का ध्यान करता हूँ।

तिरस्कुर्वतोऽन्यामारोपासनार्चें परित्यक्तधर्माध्वरस्यास्य जन्तोः।
त्वदाराधनान्यस्त चित्तस्य किं मे करिष्यन्तमयी धर्मरास्य दूताः॥

भावार्थ—मैं तपस्या करके शरीर को क्षय नहीं करना चाहता, तीर्थों में भ्रमण करके अपने पाँवों को लूला करना नहीं चाहता तथा वेद पाठ करते हुए जीवन-यापन करने की इच्छा भी मेरी नहीं है। मैं तो सभी मंगल कर्मों की साधना स्वरूप तुम्हारे दोनों चरणों की ही सेवा करता हूँ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न मन्ये हरिं ना विधातारमीशं न वह्निं न ह्यर्कं न चेन्द्रादि देवान्।
शिवोदीरितानेक वाक्यप्रबन्धस्त्वदर्चाविधानं विशत्वम्ब मत्याम्॥

भावार्थ—मैं अन्य सब देवताओं की उपासना, अर्चना को छोड़कर, सब धर्मयज्ञों का परित्याग करके अपने मन को तुम्हारी ही आराधना में लगाये हुए हूँ। धर्मराज के दूत मेरा क्या कर सकते हैं?

नरा मां विनिन्दन्तु नाम त्यजेद्वान्धवा ज्ञातयः सन्त्यजन्तु।
यमीया भटा नारके पातयन्तु त्वमेका गतिर्मे त्वमेका गतिर्मे॥

भावार्थ—हे अम्बा! मैं न हरि को मानता हूँ, न ब्रह्मा को, न ईशान को मानता हूँ, न वह्नि को, न सूर्य को मानता हूँ और न इन्द्र आदि देवताओं को ही। मेरा तो शिव द्वारा कथित तन्त्र वाक्यों में एकान्तिक विश्वास है। उसी के परिणाम स्वरूप तुम्हारी विधि मेरे मन में प्रविष्ट हो।

ओ३म महाकाल रुद्रोदित स्तोत्रमेतत
सदाभक्तिभावेन योऽध्येति भक्तः।
न चापन्न शोको न रोगो
न मृत्यु र्भवेत् सिद्धिरन्ते च कैवल्यलाभ॥

भावार्थ—जो कोई भक्त महाकाल रुद्र द्वारा वर्णित इस स्तोत्र का भक्तिपूर्वक पाठ करता है, वह शोक, रोग एवं अकाल मृत्यु से मुक्ति पा लेता है, उसे सिद्धि प्राप्त होती है तथा अन्त में कैवल्य लाभ होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इदं शिवांयाः कथितं सुधाधाराख्यं स्तवनम्।
एतस्य सतताम्यासातू सिद्धिः करतले स्थिता॥

भावार्थ—इस सुधाधारा नामक शिवा स्तोत्र का जो व्यक्ति निरन्तर अभ्यास करता है, सिद्धि उसके करतलगत हो जाती है।

एतत् स्तोत्रं च कवचं पदमं त्रितयमप्यदः।
पठनीयं प्रयत्नेन नैमित्तिक समर्द्दणे॥

भावार्थ—नैमित्तिक-अर्चन में इस स्तोत्र, कवच और निम्नलिखित पद—इन तीनों का प्रयत्नपूर्वक पाठ करना चाहिए।

सौम्येन्दीवरनीलरनीरदघटा प्रोद्दामदेहच्छटा।
लास्योन्माद निनादमङ्गल चयैः श्रोण्यन्तदोलज्जटा॥
साकाली करवाल कालकलना हन्त्वश्रियं चण्डिका॥

भावार्थ—जिनके शरीर की छटा नील-कमल तथा मेघ के समान है, उन्मत्तभाव से मंगलध्वनि पूर्वक नृत्य करते समय जिनके नितम्ब प्रदेश पर जटाएँ झूलती रहती हैं, वे भीषण खड्ग को घुमाने वाली प्रचण्ड मूर्ति काली हमारे अशुभों का नाश करें।

कालीक्रोध कराल कालभयदोन्माद प्रमोदालया,
नेत्रोपान्त कृतान्तदैत्य निवहा प्रोद्दम देहाभया।
पायाद्वो जयकालिका प्रवलिका हुंकारघोराननना,
भक्तानामभयप्रदा विजयदा विश्वेशसिद्धासन॥

भावार्थ—जो क्रोधवेश में करालकाल को भी भय देने वाली, भीषणमूर्ति धारण करके हर्ष में उन्मत्त हो उठती हैं, जो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपने कटाक्ष मात्र से ही दैत्यों को नष्ट कर देती हैं, जिनकी भयानक मूर्ति भक्तों को अभय प्रदान करती है, हूंकार ध्वनि से युक्त जिनका मुखमण्डल अत्यन्त भीषण है, स्वयं विश्वेश्वर जिनके सिद्धासन हैं, ज़ो अपने भक्तों को अभय तथा विजय देने वाली है, वे जयकाली हमारी रक्षा करें।

करालोन्मुखी कालिका भीमकान्ता
कटिव्याघ्र चर्मावृताः दानवान्ता।
हूं हूं कड्मडीनादिनी कालिका तु
प्रसन्ना सदाः न प्रसन्नान् पुनातु॥

भावार्थ—जो करालोन्मुखी कालिका देवी भीमकाय रूप धरकर, कटि प्रदेश में व्याघ्र चर्म पहने दानवों का संहार करती हैं तथा हूं हूं कड़मड़ शब्द का उच्चारण करती हैं, वे कालिका देवी प्रसन्न होकर हमको सदैव प्रसन्न तथा पवित्र करती रहें।

॥ इति श्रीमहाकालरुद्र विरचित सुधाधाराख्य् काली स्तोत्रम् समासम्॥

श्री काली स्तवन

नमामि कृष्ण रूपिणीं कृष्णाङ्गयष्टिधारिणीम्।
समग्रतत्वसागरामपारगह्वराम् ॥ १ ॥

भावार्थ—मैं कृष्णरूपा कालिका को नमस्कार करता हूँ, उनकी अङ्गयष्टि कृष्णवर्ण की है। वे समस्त तत्वों की सागर स्वरूपा हैं। वे परा हैं अर्थात् उन्हें सहज ही प्राप्त नहीं किया जा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सकता। वे अपारा हैं अर्थात् भक्तजन उन्हें सरलता से प्राप्त कर लेते हैं। वे गह्वरा हैं अर्थात् बड़ी दुर्विज्ञेया हैं॥ १॥

शिवांप्रभासमुज्जवलां स्फुरच्छशांकशेखराम्।
ललाटरत्नभास्वरां जगत्प्रदीप्तिभास्कराम्॥ २॥

भावार्थ—वे कल्याण स्वरूपा, उज्ज्वला तथा मस्तक पर प्रकाशित चन्द्रमा को धारण करने वाली हैं। वे सबके ललाट रूपी रत्न को प्रकाशित करने वाली हैं और वे ही सम्पूर्ण संसार क़ो प्रकाशित करने वाली सूर्य के समान हैं॥ २॥

महेन्द्रकश्यपार्चितां सनत्कुमारसंस्तुताम्।
सुराऽसुरेन्द्रवन्दितां यथार्थनिर्मलाद्भुताम्॥ ३॥

भावार्थ—वे महेन्द्र तथा कश्यप द्वारा पूजित हैं, वे सनत्कुमार द्वारा संस्तुत हैं, वे देवता तथा दानवों से वन्दित हैं और वे यथार्थतः निर्मला एवं अद्‌भुता हैं॥ ३॥

अतर्क्यरोचिरूर्जितां विकारदोषवर्जिताम्।
मुमुक्षुभिर्विचिन्तितां विशेषतत्वसूचिताम्॥ ४॥

भावार्थ—उन्हें तर्क द्वारा नहीं समझा जा सकता। वे ज्योतिः रूपा, उर्जिता (ओज को प्रदान करने वाली), विकार तथा दोषों से रहित, मोक्षार्थियों द्वारा चिन्तन की जाने वाली तथा विशेष तत्वज्ञान द्वारा पहचानी जाने वाली हैं॥ ४॥

मृतास्थिनिर्मितस्रजां मृगेन्द्रवाहनाग्रजाम्।
सुशुद्धतत्त्वतोषणां त्रिवेदपारभूषणाम्॥ ५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भावार्थ—उनकी माला मृत शरीर की हड्डियों से निर्मित है, उनका वाहन सिंह है, वे अग्रजा हैं अर्थात् उनका जन्म सबसे पहले हुआ है, वे विशुद्ध तत्व होने से प्रसन्न होने वाली हैं और वे तीनों वेदों से परे होकर सुशोभित हैं ॥ ५ ॥

भुजङ्गहारहारिणीं कपालखण्डधारिणीम्।
सुधार्मिकोपकारिणीं सुरेन्द्रवैरिघातिनीम् ॥ ६ ॥

भावार्थ—वे सर्पों का हार धारण करने वाली, हाथ में कपालखण्ड को धारण करने वाली, सु-धार्मिकों का उपकार करने वाली हैं। वह सुरों के देवता इन्द्र के वैरियों का विनाश करने वाली है।॥ ६ ॥

कुठारपाशचापिनीं कृतान्तकामभेदिनीम्।
शुभां कपालमालिनीं सुवर्णकल्पशाखिनीम् ॥ ७ ॥

भावार्थ—वे कुठार, पाष तथा धनुष को धारण किये हुए हैं। वे यम की कामना अर्थात् मृत्यु का निवारण करने वाली हैं। वे शुभ करने वाली हैं, कपाल-माला को धारण करने वाली तथा सुन्दर वर्ण वाली हैं ॥ ७ ॥

श्मशानभूमि वासिनीं द्विजेन्द्रमौलिभाविनीम्।
तमोऽन्धकारयामिनीं शिवस्वभावकामिनीम् ॥ ८ ॥

भावार्थ—वे श्मशान भूमि में निवास करने वाली, श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा चिन्तन की जाने वाली, तमोऽन्धकार रूपिणी रात्रि के समान तथा कल्याणकारक स्वभाव वाली कामिनी हैं ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सहस्त्रसूर्य्यराजिकां धनञ्जयोग्रकारिकाम्।
सुशुद्ध काल कन्दलां सुभृङ्गवृन्दमञ्जुलाम्॥ ९॥

भावार्थ—वे सहस्त्रों सूर्य के समान उज्जवल स्वरूप वाली, धनंजय को उग्र करने वाली, विशुद्ध काल की मूलभूता तथा सुन्दर भ्रमरों के समान मनोरम वर्ण वाली हैं॥ ९॥

प्रजायिनीं प्रजावतीं नमामि मातरं सतीम्।
स्वकर्मकारणे गतिं हरिप्रियाञ्च पार्वतीम्॥ १०॥

भावार्थ—वे प्रजा को उत्पन्न करने वाली तथा पालन करने वाली हैं। ऐसी सती माता को मैं नमस्कार करता हूँ। वे अपने कर्म के कारण गति स्वरूपा तथा शिवजी की प्रिया पार्वती हैं॥ १०॥

अनन्तशक्तिकान्तिदां यशोऽर्थभुक्तिमुक्तिदाम्।
पुनः पुनर्जगद्धितां नामाम्यहं सुरार्चिताम्॥ ११॥

भावार्थ—वे अनन्त शक्ति तथा कांति को देने वाली, यश, धन, भोग तथा मोक्ष को देने वाली, संसार का बारम्बार कल्याण करने वाली तथा देवताओं द्वारा पूजित हैं—मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ॥ ११॥

जयेश्वरि त्रिलोचने प्रसीद देवि पाहिमाम्।
जयन्ति ते स्तुवन्ति ये शुभं लभन्त्यमोक्षतः॥ १२॥

भावार्थ—हे ईश्वरी! तुम्हारी जय हो। हे त्रिलोचने! तुम मुझ पर कृपा करो। हे देवी! मेरी रक्षा करो। जो लोग तुम्हारी स्तुति करते हैं, उन्हें विजय प्राप्त होगी, वे कल्याण तथा मोक्ष को पा लेते हैं॥ १२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सदैव ते हतद्विषः परं भवन्ति सज्जुषः।
जराः परे शिवेऽधुना प्रसाधि माँ करोमि किम्॥ १३॥

भावार्थ—उनके शत्रुओं का सदैव नाश होता है और वे यशस्वी होते हैं। हे शिवे! तुम मेरी उन्नति करो। मैं क्या करूँ॥ १३॥

अतीव मोहितात्मनो वृथा विचेष्टितस्य मे।
कुरु प्रसादितं मनो यथास्मि जन्मभंजनः॥ १४॥

भावार्थ—मैं अत्यधिक मोह से ग्रस्त हूँ, मेरे सभी प्रयास व्यर्थ ही रहे हैं। तुम मुझ पर प्रसन्न होओ, ताकि मैं जन्म के बन्धन से मुक्त हो सकूँ॥ १४॥

तथा भवन्तु तावका यथैव घोषितालकाः।
इमां स्तुतिं ममेरितां पठन्ति कालिसाधकाः॥
न ते पुनः सुदुस्तरे पतन्ति मोह गह्वरे॥ १५ ॥

भावार्थ—तुम्हारे सब भक्त वैसे ही हों, जैसा कि घोषित है। मेरी इस स्तुति का भगवती काली के जो भी उपासक पाठ करते हैं, वे फिर अत्यन्त गहरे मोह के गड्ढे में नहीं गिरते॥ १५॥

॥ इति श्री ब्रह्मकृत कालीस्तवः समासम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीमद् शंकराचार्य विरचित–
श्री कालिकाष्टक

ध्यान

गलद्रक्तमुण्डावलीकण्ठमाला,
महोघोररावा सुदंष्ट्रा कराला।
विवस्त्रा श्मशानालया मुक्तकेशी,
महाकालकामाकुला कालिकेयम्॥ १॥

भावार्थ—वे भगवती काली अपने कण्ठ में रक्त टपकते हुए मुण्डों की माला को पहने हुए हैं, वे अत्यन्त घोर शब्द कर रहीं हैं, उनकी सुन्दर दाढ़ें भयानक हैं, वे वस्त्रहीना हैं, वे श्मशान में निवास करती हैं, उनके केश बिखरे हुए हैं और वे महाकाल के साथ कामातुर हो रही हैं॥ १॥

भुजेवामयुग्मे विरोऽसि दधाना,
वरं दक्षयुग्मेभयं वै तथैव।
सुमध्याऽपि तुङ्गस्तना भारनम्रा,
लसद्रक्तसृक्कद्वया सुस्मितास्या॥ २॥

भावार्थ—वे अपने दोनों बायें हाथों में नरमुण्ड तथा खड्ग को धारण किये हैं तथा दोनों दाएँ हाथों में वर तथा अभय मुद्रा लिए हैं। वे सुन्दर कटि वाली, उत्तुङ्गस्तनों के भार से झुकी हुई सी, दो रक्तमालाओं से सुशोभित तथा मधुर-मुस्कान से युक्त हैं॥ २॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शवद्वन्द्वकर्णावतंसा सुकेशी,
लसत्प्रेतपाणिं प्रयुक्तैककांची।
शवाकारमञ्चाधिरूढा शिवाभि-
श्चतुर्दिक्षु शब्दायमानाऽभिरेजे॥ ३॥

भावार्थ—उनके कानों में दो शवरूपी आभूषण हैं, उनके केश सुन्दर हैं, वे शवों के हाथों से सुशोभित करधनी को धारण किये हुए हैं, वे शवरूपी मंच पर आरूढ़ हैं तथा उनके चारों ओर शिवाओं का शब्द गूँज रहा है॥ ३॥

स्तुति

विरंच्यादिदेवास्त्रयस्ते गुणास्त्रीन्,
समाराध्य कालीं प्रधाना बभूवुः।
अनादिं सुरादिं मखादिं भवादिं,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥ १॥

भावार्थ—हे देवि! तुम्हारे त्रिगुणात्मक रूप से उत्पन्न ब्रह्मा आदि तीनों देवता तुम्हारी ही आराधना करके प्रधान हुए हैं। तुम्हारा स्वरूप अनादि, सुरादि तथा विश्व का मूलभूत है, उसे देवता भी नहीं जानते हैं॥ १॥

जगन्मोहिनीयम् तु वाग्वादिनीयम्,
सुहृद्पोषिणी शत्रुसंहारणीयम्।
वचःस्तम्भनीयम् किमुच्चाटनीयम्,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥ २॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भावार्थ—तुम्हारी मूर्ति संसार को मोहित करने वाली, शत्रुओं का संहार करने वाली, वचन का स्तम्भन करने वाली तथा दुष्टों का उच्चाटन करने वाली है, तुम्हारे इस स्वरूप को देवता भी नहीं जानते है॥ २॥

इयं स्वर्गदात्री पुनः कल्पवल्ली,
मनोजास्तु कामान्यथार्थं प्रकुर्यात्।
तथा ते कृतार्था भवन्तीति नित्यं,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥ ३॥

भावार्थ—यह मूर्ति स्वर्ग को देने वाली, कल्पलता के समान और भक्तों की मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाली है, जिससे वे सदैव कृतार्थ बने रहते हैं। तुम्हारे इस स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं॥ ३॥

सुरापानमत्ता सुभक्तानुरक्ता,
लसत्पूतचित्ते सदाविर्भवस्तें।
जपध्यानं पूजासुधाधौतपंका,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥ ४॥

भावार्थ—तुम सुरापान से मस्त रहती हो तथा अपने भक्तों पर कृपा बिखेरती हो, जप-ध्यान-पूजा रूपी अमृत से निर्मल तथा पवित्र हृदय से तुम्हारा अविर्भाव सुशोभित होता है। तुम्हारे इस स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं॥ ४॥

चिदानन्दकन्दं हंसन्मन्दमन्दं,
शरच्चन्द्र कोटिप्रभापुञ्जबिम्बम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुनीनां कवीनां हृदि द्योतमानं,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥ ५ ॥

भावार्थ—तुम चिदानन्द की मूल, मन्द-मन्द मुस्काने वाली, करोड़ों शरद् चन्द्रमाओं की प्रभा से युक्त मुख वाली एवं मुनियों तथा कवियों के हृदय को प्रकाशित करने वाली हो। तुम्हारे इस स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं ॥ ५ ॥

महामेघकाली सुरक्ताऽपि शुभ्रा,
कदाचिद्विचित्रा कृतिर्योगमाया।
न बाला न वृद्धा न कामातुराऽपि,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥ ६ ॥

भावार्थ—तुम महामेघों के समान कृष्णवर्णा, रक्तवर्णा तथा शुभ्रवर्णा भी हो। तुम कभी-कभी विचित्र आकृति को धारण करने वाली योगमाया हो। तुम न बाला हो, न वृद्धा हो और न कामातुरा हो। तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं ॥ ६ ॥

क्षमास्वापराधं महागुप्तभावं,
मयालोकमध्ये प्रकाशीकृतं यत्।
तव ध्यानपूतेन चापल्यभावात्,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥ ७ ॥

भावार्थ—मैंने तुम्हारे ध्यान से पवित्र चापल्यभाव से तुम्हारे अत्यन्त गुप्त भाव को जो संसार में प्रकट कर दिया है, उस अपराध के लिए तुम मुझे क्षमा करो। तुम्हारे इस स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यदि ध्यान युक्तं पठेद्यो मनुष्य,-
स्तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च।
गृहे चाष्टसिद्धिर्मृते चापि मुक्तिः
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥ ८॥

भावार्थ—जो मनुष्य ध्यान युक्त होकर इस अष्टक का पाठ करता है, वह सम्पूर्ण संसार में उच्चपद प्राप्त करता है। उसके घर में आठों सिद्धियाँ बनी रहती हैं तथा मृत्यु के पश्चात् मुक्ति प्राप्त होती है। हे देवि! तुम्हारे इस स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं॥ ८॥

॥ इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितं श्रीकालिकाष्टम् समाप्तम्॥

श्री कालिका सहस्त्रनाम स्तोत्र

श्मशानकालिका काली भद्रकाली कपालिनी।
गुह्यकाली महाकाली कुरुकुल्ला विरोधिनी॥
कालिका कालरात्रिश्च महाकालनितम्बिनी।
कालभैरव भार्या च कुलवर्त्मप्रकाशिनी॥
कामदा कामिनी कन्या कमनीयस्वरूपिणी।
कस्तूरीरस लिप्ताङ्गी कुञ्जरेश्वर गामिनी॥
ककारवर्ण सर्वाङ्गी कामिनी कामसुन्दरी।
कामार्त्ता कामरूपा च कामधेनुः कलावती॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कांता कामस्वरूपा च कामाख्या कुलकामिनी।
कुलीना कुलवत्यम्बा दुर्गा दुर्गति नाशिनी॥
कौमारी कलजा कृष्णा कृष्णदेहा कृशोदरी।
कृशाङ्गी कुलिशांगी क्रीं क्रींकारी कमला कला॥
करालास्या कराली च कुलकांतापराजिता।
उग्रा उग्रप्रभा दीप्ता विप्रचित्ता महाबला॥
नीला घना मेघनादा मात्रा मुद्रा मितामिता।
ब्राह्मी नारायणी भद्रा सुभद्रा भक्तवत्सला॥
माहेश्वरी च चामुण्डा वाराही नारसिंहिका।
वज्राङ्गी वज्रकंकाला नृमुण्डस्त्रग्विणी शिवा॥
मालिनी नरमुण्डाली गलद्रक्त विभूषणा।
रक्तचन्दन सिक्ताङ्गी सिंदूरारुण मस्तका॥
घोररूपा घोरदंष्ट्रा घोरा घोरतरा शुभा।
महादंष्ट्रा महामाया सुन्दरी युगदन्तुरा॥
सुलोचना विरूपाक्षी विशालाक्षी त्रिलोचना।
शारदेन्दु प्रसन्नास्या स्फुरत् स्मेताम्बुजेक्षणा॥
अट्टहासा प्रफुल्लास्या स्मेरवक्त्रा सुभाषिणी।
प्रफुल्ल पद्मावदना स्मितास्या प्रियभाषिणी॥
कोटराक्षी कुलश्रेष्ठा महती बहुभाषिणी।
सुमतिः कुमतिश्चण्डा चण्डमुण्डातिवेगिनी॥
सुकेशी मुक्तकेशी च दीर्घकेशी महाकचा।
प्रेतदेहाकर्णपुरा प्रेतपाणिसुमेखला॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रेतासना प्रियप्रेता पुण्यदा कुलपण्डिता।
पुण्यालया पुण्यदेहा पुण्यश्लोका च पावनी॥
पूता पवित्रा परमा परा पुण्य विभूषणा।
पुण्यनाम्नी मोहितरा वरदा खड्गपाशिनी॥
नरमुण्डहस्ता शान्ता च छिन्नमस्ता सुनासिका।
दक्षिणा श्यामला श्यामा शांता पीनोन्नतस्तनी॥
दिगम्बरी घोररावा सृक्कान्तरक्तवाहिनी।
घोररावा शिवासंगा निःसंगा मदनातुरा॥
मत्ता प्रमत्ता मदना सुधासिन्धुनिवासिनी।
अभिमत्तामहामत्ता सर्वाकर्षण कारिणी॥
गीतप्रिया वाद्यरता प्रेतनृत्य परायणा।
चतुर्भुजा दशभुजा अष्टादशभुजा तथा॥
कात्यायनी जगन्माता जगती परमेश्वरी।
जगद्बन्धुर्जगद्धात्री जगदानन्दकारिणी॥
जगज्जीववती हैमवती माया महालया।
नागयज्ञोपवीताङ्गी नागिनी नागशायिनी॥
नागकन्या देवकन्या गान्धारी किन्नरी सुरी।
मोहरात्रि महारात्रि दारुणामा सुरासुरी॥
विद्याधरी वसुमति यक्षिणी योगिनीजरा।
राक्षसी डाकिनी वेदमयी वेदविभूषणा॥
श्रुतिस्मृति महाविद्या गुह्यविद्या पुरातनी।
चिंताचिंता स्वधा स्वाहा निद्रातंद्रा च पार्वती॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपर्णा निश्चला लीला सर्वविद्या तपस्विनी।
गङ्गा काशी शची सीता सती सत्यपरायणा॥
नीतिः सुनीतिः सुरुचिस्तुष्टिः पुष्टिर्धृतिः क्षमा।
वाणी बुद्धिर्महालक्ष्मी लक्ष्मीर्नीलसरस्वती॥
स्त्रोतस्वती स्त्रोतवती मातंगी विजया जया।
नदी सिन्धुः सर्वमयी तारा शून्य निवासिनी॥
शुद्धा तरंगिणी मेधा लाकिनी बहुरूपिणी।
सदानन्दमयी सत्या सर्वानन्दस्वरूपिणी॥
सुनन्दा नन्दिनी स्तुत्या स्तवनीया स्वभाविनी।
रंकिणी टंकिणी चित्रा विचित्रा चित्ररूपिणी॥
पद्मा पद्मसुखी पद्मविभूषणा।
शाकिनी हाकिनी क्षान्ता राकिणी रुधिरप्रिया॥
भ्रान्तिर्भव रुद्राणी मृडानी शत्रुमर्दिनी।
उपेन्द्राणी महेशानी ज्योत्स्ना चेन्द्रस्वरूपिणी॥
सूर्य्यात्मिका रुद्रपत्नी रौद्री स्त्री प्रकृतिः पुमान।
शक्तिः सूक्तिर्मतिमती भुक्तिर्मुक्तिः पतिव्रता॥
सर्वेश्वरी सर्वमता सर्वाणी हरवल्लभा।
सर्वज्ञा सिद्धिदा सिद्धा भाव्या भव्या भयापहा॥
कर्त्री हर्त्री पालयित्री शर्वरी तामसी दया।
तमिस्त्रा यामिनीस्था चस्थिरा धीरा तपस्विनी॥
चार्वङ्गी चंचला लालजिह्वा चारु चरित्रिणी।
त्रपा त्रपावती लज्जा निर्लज्जा ह्रीं रजोवती॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सत्त्वती धर्मनिष्ठा श्रेष्ठा निष्ठुरवादिनी।
गरिष्ठा दुष्टसंहर्त्री विशिष्टा श्रेयसीघृणा॥
भीमा भयानका भीमनादिनी भीः प्रभावती।
वागीश्वरी श्रीर्यमुना यज्ञकर्त्री यजुःप्रिया॥
ऋक्सामार्थर्वनिलया रागिणी शोभनस्वरा।
कलकण्ठी कम्बुकण्ठी वेणुवीणापरायणा॥
वंशिनी वैष्णवी स्वच्छा धात्री त्रिजगदीश्वरी।
मधुमती कुण्डलिनी ऋद्धिः सिद्धिः शुचिस्मिता॥
रम्भोर्वशी रती रामा रोहिणी रेवती रमा।
शंखिनी चक्रिणी गदिनी पद्मिनी तथा॥
शूलिनी परिघास्त्रा च पाशिनी शारंगपाणिनी।
पिनाकधारिणी धूम्रा शरभी वनमालिनी॥
वज्रिणी समरप्रीता वेगिनी रणपण्डिता।
जटिनी विम्बिनी नीला लवण्याम्बुधिचन्द्रिका॥
बलिप्रिया सदा पूज्या पूर्णा दैत्येन्द्र माथिनी।
महिषासुरसंहन्त्री वासिनी रक्तदन्तिका॥
रक्तपा रुधिराक्ताङ्गी रक्तखर्परहस्तिनी।
रक्तप्रिया मांसरुचिरा सवासरक्तमानसा॥
गलच्छोणित मुडालिकण्ठमाला विभूषणा।
शवासना चितान्तस्था माहेशी वृषवाहिनी॥
वामदेवी महोदवी गौरी सर्वज्ञभाविनी।
बालिका तरुणी वृद्धा वृद्धमाता जरातुरा॥
सुभ्रुर्विलासिनी ब्रह्मवादिनी ब्राह्मणी मही॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वप्नावती चित्रलेखा लोपामुद्रा सुरेश्वरी।
अमोघा ऽरुन्धती तीक्ष्णा भोगवत्यनुवादिनी॥
मन्दाकिनी मन्दहासा जवालमुख्य सुरान्तका।
मानदा मानिनी मान्या माननीया मदोद्धता॥
मदिरा मदिरान्मादा मेध्या नव्या प्रसादिनी।
सुमध्यानन्तगुणिन सर्वलोकोत्तमोत्तमा॥
जयदा जित्वरा जेत्री जयश्रीर्जयशालिनी।
सुखदा शुभदा सत्या सभासंक्षोभ कारिणी॥
शिवदूती भूतिमती विभूतिर्भीषणानना।
कौमारी कुलजा कुन्ती कुलस्त्री कुलपालिका॥
कीर्तिर्यशस्विनी भूषा भूष्या भूतपति प्रिया।
सगुणा निर्गुणा धृष्टानिष्ठा काष्ठा प्रतिष्ठिता॥
धनिष्ठा धनदा धन्यावसुधा स्वप्रकाशिनी।
उर्वी गुर्वी गुरुश्रेष्ठा सगुणा त्रिगुणात्मिका॥
महाकुलीना निष्कामा सकामा कामजीवना।
कामदेवकला रामाभिरामा शिवनर्तकी॥
चिन्तामणि कल्पलता जाग्रती दीनवत्सला।
कार्त्तिकी कीर्त्तिका कृत्या अयोध्या विषमासमा॥
सुमंत्रा मंत्रिणी घूर्णा ह्लादिनी क्लेशनाशिनी।
त्रैलोक्य जननी हृष्टा निर्मांसा मनोरूपिणी॥
तड़ाग निम्नजठरा शुष्कमांसास्थि मालिनी।
अवन्ती मथुरा माया त्रैलोक्यपावनीश्वरी॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

व्यक्ताव्यक्तानेकमूर्त्तिः शर्वरी भीमनादिनी।
क्षेमंकरी शंकरी च सर्वसम्मोह कारिणी॥
अर्द्धतेजस्विनी क्लिन्ना महातेजस्विनी तथा।
अद्वैता भोगिनी पूज्या युवती सर्वमंगला॥
सर्वप्रियकरी भोग्या धरणी पिशिताशना।
भयंकरी पापहरा निष्कलंका वशंकरी॥
आशा तृष्णा चन्द्रकला निद्रान्या वायुवेगिनी।
सहस्त्रसूर्यसंकाशा चन्द्रकोटि समप्रभा॥
वह्निनी मण्डलसंस्था च सर्वतत्त्व प्रतिष्ठिता।
सर्वाचारवती सर्वदेवकन्याधिदेवता॥
दक्षकन्या दक्षयज्ञनाशिनी दुर्गतारिका।
इज्या पूज्या विभीभूर्तिः सत्कीर्तिर्ब्रह्मरूपिणी॥
रम्भोरुश्चतुरा राका जयन्ती करुणा कुहुः।
मनस्विनी देवमाता यशस्या ब्रह्मचारिणी॥
ऋद्धिदा वृद्धिदा वृद्धिःसर्वाद्या सर्वदायिनी।
आधाररूपिणी ध्येया मूलाधार निवासिनी॥
अज्ञा प्रज्ञापूर्णमनाश्चन्द्र मुख्यनुकूलिनी।
वावदूका निर्म्नाभिः सत्या संध्या दृढव्रता॥
आन्वीक्षिकी दंडनीति स्त्रयी त्रिविद सुन्दरी।
ज्वलिनी ज्वांलिनी शैलतनया विन्ध्यवासिनी॥
अमेया खेचरी धैर्या तुरीया विमलातुरा।
प्रगल्भा वारुणीच्छाया शशिनी विस्फुलिंगिनी॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भुक्तिः सिद्धिः सदा प्राप्तिः प्राकाम्या महिमाणिमा।
इच्छासिद्धिर्विसिद्धा च वशित्वोर्ध्वनिवासिनी॥
लघिमा चैव गायत्री सावित्री भुवनेश्वरी।
मनोहरा चिता दिव्या देवयुदारा मनोरमा॥
पिंगला कपिला जिह्वारसंज्ञा रसिका रसा।
सुषुम्नेडा भोगवती गान्धारी ' न।
पाञ्चाली रुक्मणी राधाराध्या भीमाधिराधिका॥
अमृतातुलसी वृन्दा कैटभी कपेटश्वरी॥
उग्रचण्डेश्वरी वीरा जननी वीर सुन्दरी।
उग्रतारा यशोदाख्या दैवकी देवमानिता॥
निरञ्जना चित्रेदवी क्रोधिनी कुलदीपिका।
कुलवागीश्वरी वाणी मातृका द्राविणी द्रवा॥
योगेश्वरी महामारो भ्रामरी बिन्दुरूपिणी॥
दूती प्राणेश्वरी गुप्ता बहुला चमरी प्रभा।
कुब्जिका ज्ञानिनी ज्येष्ठा भुशंडी प्रकटा तिथिः।
द्रविणी गोपनी माया कामबीजेश्वरी क्रिया॥
शांभवी के मेना मूषलास्त्रा तिलोत्तमा।
अमेय विक्रमा क्रूरा सम्पत्शाला त्रिलोचना॥
सुस्थीहव्य वहा प्रीतिरुष्मा धूम्रार्चिरङ्गदा।
तपिनी तापिनी विश्वा भोगदा धारिणीधारा॥
त्रिखण्डा बोधिनी वश्या भोगदा सकला शब्दरूपिणी।
बीजरूपा महामुद्रा योगिनी योनिरूपिणी॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनंगकुसुमानंगमेखला अनंगरूपिणी।
वज्रेश्वरी च जयिनी सर्वद्वन्द्वक्षयंकरी॥
षडंगयुवती योगयुक्ता ज्वालांशुमालिनी।
दुराशया दुराधारा दुर्जया दुर्गरूपिणी॥
दुरन्ता दुष्कृतिहरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा।
हंसेश्वरी त्रिकोणस्था शाकुम्भर्यनुकम्पिनी॥
त्रिकोण निलया नित्या परमामृतरञ्जिता।
महाविद्येश्वरी श्वेता भेरुण्डा कुलसुन्दरी॥
त्वरिता भक्ति संसकता भक्तवश्या सनातनी।
भक्तानन्दमयी भक्तभाविका भक्तशंकरी॥
सर्वसौन्दर्य निलया सर्वसौभाग्य शालिनी।
सर्वसंभोगभवना सर्वसौख्य निरूपिणी॥
कुमारीपूजनरता कुमारीव्रत चारिणी।
कुमारी भक्ति सुखिनी कुमारीरूपधारिणी॥
कुमारीपूजकप्रीता कुमारीप्रीतिदा प्रिया।
कुमारी सेवकासंगा कुमारी सेवकालया॥
आनन्दभैरवी बाला भैरवी वटुक भैरवी।
श्मशान भैरवी कालभैरवी पुरभैरवी॥
महाभैरव पत्नी च परमानन्द भैरवी।
सुधानन्दभैरवी च उन्मादानन्द भैरवी॥
मुक्तानन्द भैरवी च तथा तरुण भैरवी।
ज्ञानानन्दभैरवी च अमृतानन्द भैरवी॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाभयंकरी तीव्रा तीव्रवेगा तपस्विनी।
त्रिपुरा परमेशानी सुन्दरी पुरसुन्दरी॥
त्रिपुरेशी पञ्चदशी पंचमी पुरवासिनी।
महासप्तदशी चैव षोडशी त्रिपुरेश्वरी॥
महांकुश स्वरूपा च महाचक्रेश्वरी त्रिपुरमालिनी॥
राजराजेश्वरी धीरा महात्रिपुर सुन्दरी।
सिन्दूर पूर रुचिरा श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी॥
सर्वाङ्ग सुन्दरी रक्ता रक्तवस्त्रोत्तरीयिणी।
जावायावकसिन्दूर रक्तचन्दनधारिणी॥
जावायावकसिन्दूर रक्तचन्दन रूपधृक्।
चामरी बाकुटिलनिर्मल श्यामकेशिनी॥
वज्रमोक्तिक रत्नाढ्य किरीट मुकुटोज्ज्वला।
रत्नकुण्डल संसक्त सफुरद्गण्ड मनोरमा॥
कुंजरेश्वर कुम्भोत्थ मुक्तारंजित नासिका।
मुक्ताविद्रुम माणिक्यहाराढ्यस्तनमण्डला॥
सूर्यकान्तेन्दु कान्ताढ्य स्पर्शाश्मकंठभूषणा।
वीजपूरस्फुरद्वीज दन्तपंक्तिर नुतमा॥
कामकोदण्डकाभुग्न भ्रूकाटाक्ष प्रवर्षिणी।
मातङ्गकुम्भवक्षीजा लसत्कोकनदेक्षणा॥
मनोज्ञ शष्कुली कर्णा हंसोगति विडम्बिनी।
पद्मरागांगद ज्यातिदश्चितुष्कप्रकाशिनी॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नानामणि परिस्फूर्जच्छुद्र कांचन-कंकना।
नागेन्द्रदन्त निर्माणवलयांकित पाणिनी॥
अंगुरीयक चित्रांगी विचित्र क्षुद्रघण्टिका।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमंजीर शिंजिनी॥
कर्पूरागरुकस्तूरी कुंकुम द्रव लेपिता।
विचित्र रत्न पृथिवी कल्प शाखि तलस्थिता॥
रत्नद्वीप स्फुरद्रक्त सिंहासन विलासिनी॥
षटचक्रभेदनकरी परमानन्दरूपिणी।
सहस्त्रदलपद्यान्त श्चन्द्रमण्डलवर्तिनी॥
ब्रह्मरूपशिव क्रीडनानासुख विलासिनी।
हर विष्णु विरिंचीन्द्र ग्रहनायक सेविता॥
शिवा शैवा च रुद्राणी तथैव शिववादिनी।
मातङ्गिनी श्रीमती च तथैवानन्द मेखला॥
डाकिनी योगिनी चैव तथोपयोगिनी मता।
मोहेश्वरी वैष्णवी च भ्रामरी शिवरूपिणी॥
अलम्बुषा वेगवती क्रोधरूपासुमेखला।
गान्धारी हस्तजिह्वा च इडा चैव शुभंकरी॥
पिङ्गला ब्रह्मदूती च सुषुम्ना चैव गंधिनी।
आत्मयोनिर्ब्रह्मयोनिर्जगद् योनिरयोनिजा॥
भगरूपा भगस्थात्री भगिनी भगरूपिणी।
भगात्मिका भगाधररुपिणी भगमालिनी॥
लिंगाख्या चैव लिंगेशी त्रिपुराभैरवी तथा।
लिंगगीतिः सुगीतिश्च लिंगस्था लिंगरूपधृक्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लिंगमाना लिंगभवा लिंगलिंगा च पार्वती।
भगवती कौशिकी च प्रेमा चैव प्रियंवदा॥
गृध्ररूपा शिवरूपा चक्रिणी चक्ररूपधृक्।
लिंगाभिधायिनी लिंगप्रिया लिंगनिवासिनी॥
लिंगस्था लिंगनी लिंगरूपिणी लिंगसुन्दरी।
लिंगगीतिर्महाप्रीता भगगीतिर्महासुखा॥
लिंगनामसदानन्दा भगनामसदागतिः।
लिंगमालाकण्ठभूषा भगमाला विभूषणा॥
भगलिंगामृतप्रीता भगलिंग स्वरूपिणी।
भगलिंगस्य रूपा च भगलिंग सुखावहा॥
स्वयम्भू कुसुमप्रीता स्वयम्भू कुसमार्चिता।
स्वयम्भू कुसुमप्राणा स्वयम्भू पुष्पतर्पिता॥
स्वयम्भू पुष्प घटिता स्वयम्भू पुष्पधारिणी।
स्वयम्भू पुष्पतिलका स्वयम्भू पुष्प चर्चिता॥
स्वयम्भू पुष्पनिरता स्वयम्भू कुसुमग्रहा।
स्वयम्भू पुष्पयज्ञांशा स्वयम्भू कुसुमात्मिका॥
स्वयम्भू पुष्पनिचिता स्वयम्भू कुसुमप्रिया।
स्वयम्भू कुसुमादान लालसोन्मत्तमानसा॥
स्वयम्भू कुसुमानन्दलहरी स्निग्धदेहिनी।
स्वयम्भू कुसमाधारा स्वयम्भू कुसुमाकुला॥
स्वयम्भू पुष्पनिलया स्वयम्भू पुष्पवासिनी।
स्वयम्भू कुसुमस्निग्धा स्वयम्भू कुसुमात्मिका॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वयम्भू पुष्पकरिणी स्वयम्भू पुष्पवाणिका।
स्वयम्भू कुसुमध्यान स्वयम्भू कुसुमप्रभा॥
स्वयम्भू कुसुमज्ञाना स्वयम्भू पुष्पभागिनी॥
स्वयम्भू कुसुमोल्लासा स्वयम्भू पुष्पवर्षिनी।
स्वयम्भू कुसुमोत्साहा स्वयम्भू पुष्परूपिणी॥
स्वयम्भू कुसुमोन्मादा स्वयम्भू पुष्पसुन्दरी।
स्वयम्भू कुसुमाराध्या स्वयम्भू कुसुमोद्भवा॥
स्वयम्भू कुसुमव्याग्रा स्वयम्भू पुष्पपूर्णिता।
स्वयम्भू पूजक प्रज्ञा स्वयम्भू होत मातृका॥
स्वयम्भू दातृरक्षित्री स्वयम्भू रक्ततारिका।
स्वयम्भू पूजकग्रस्ता स्वयम्भू पूजक प्रिया॥
स्वयम्भू वन्दकाधारा स्वयम्भू निन्दकान्तका।
स्वयम्भू प्रदसर्वस्वा स्वयम्भू प्रदपुत्रिणी॥
स्वयम्भू प्रद सस्मेरा स्वयम्भू प्रदशरीरिणी।
सर्वकालोद्भव प्रीता सर्वकालोद्भवात्त्मिका॥
सर्वकालोद्भवाद्भावा सर्वकालोद्भवोद्भवा।
कुण्डपुष्प सदा प्रीतिगेलि पुष्पसदारतिः॥
कुण्डगोलोद्भव प्राणा कुण्डगोलोद्भवात्मिका।
स्वयम्भूवा शिवा धात्री पावनी लोकपावनी।
कीर्तिर्यशस्विनी मेधा विमेधा शुक्रसुन्दरी॥
अश्विनी कृत्तिका पुष्या तेजस्का चन्द्रमण्डला।
सूक्ष्मा सूक्ष्मा वलाका च वरदा भयनाशिनी॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वरदाभयदा चैव मुक्तिबन्ध विनाशिनी।
कामुका कामदा कान्ता कामाख्या कुलसुन्दरी॥
दुखदा सुखदा मोक्षा मोक्षदार्थ प्रकाशिनी।
दुष्टादुष्टमतिश्चैव सर्वकार्य विनाशिनी॥
शुक्रधारा शुक्ररूपा शुक्रसिन्धु निवासिनी।
शुक्रालया शुक्रभोगा शुक्रपूजा सदारतिः॥
शुक्रपूज्या शुक्रहोम सन्तुष्टा शुक्रवत्सला।
शुक्रमूर्त्तिः शुक्रदेहा शुक्रपूजक पुत्रिणी॥
शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्र संस्पृहा शुक्रसुन्दरी।
शुक्रस्नाता शुक्रवरी शुक्रसेव्याति शुक्रिणी॥
महाशुक्रा शुक्रभवा शुक्रवृष्टि विधायिनी।
शुक्रभिधेया शुक्रार्हा शुक्रवन्दक वन्दिता॥
शुक्रानन्दकरी शुक्रसदानन्दाभिधायिका।
शुक्रोत्सवा सदाशुक्रपूर्णा शुक्रमनोरमा॥
शुक्रपूजकसर्वस्वा शुक्र निन्दक नाशिनी।
शुक्रात्मिका शुक्रसम्वत् शुक्राकर्षण कारिणी॥
शारदा साधक प्राणा साधका सक्त मानसा।
साधकोत्तम सर्वस्वा साधकाभक्तरक्तपा॥
साधकानन्द सन्तोषा साधकानन्दकारिणी।
आत्म विद्या ब्राह्म विद्या परब्रह्म स्वरूपिणी॥
त्रिकूपस्था पंचकूटा सर्वकूटशरीरिणी।
सर्ववर्णमयी वर्णजपमाला विधायिनी॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फल श्रुति

इति श्री कालिका नाम सहस्त्रं शिवभाषितम्।
गुह्याद्गुह्यतरं साक्षात् महापातक नाशनम्॥
पूजाकाले निशीथे च सन्ध्ययोरुमयोरपि।
लभते गाणपत्यं स यः पठेत साधकोत्तमः॥
यः पठेत पाठयेद्वापि श्रृणोति श्रावयेदय।
सर्वपाप विनिर्मुक्तः स याति कालिकापुरम्॥
श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि यः कश्चिम्मानवः स्मरेत्।
दुर्गं दुर्गशतं तीर्त्वा स याति परमां गतिम्॥
बंध्या वा काकबंध्या वा मृतवत्सा च यांगना।
श्रुत्वा स्तोत्रमिदं पुजान् लभते चिरजीविनः॥
यं यं कामयते कामं पठन् स्तोत्रमनुत्तमम्।
देवीपाठ प्रसादेन तत्तदाप्नोति निश्चितम्॥

शिवजी द्वारा कहा गया यह श्री कालिका सहस्त्रनाम स्तोत्र गुप्त से भी गुप्त है तथा महान् पापों को नष्ट करने वाला है। पूजाकाल में रात्रि में तथा दोनों संध्याओं में जो भी श्रेष्ठ साधक इसका पाठ करता है, वह परमगति को प्राप्त कर लेता है। जो व्यक्ति इसे पढ़ता अथवा सुनता है, वह समस्त पापों से मुक्त होकर देवी कालिका के लोक को जाता है।

जो कोई मनुष्य श्रद्धा अथवा अश्रद्धा से इसका स्मरण करता है वह कठिनाइयों के सैकड़ों दुःखों को पार करके परमगति को प्राप्त होता है। वन्ध्या. काकवन्ध्या अथवा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मृतवत्सा—जो भी स्त्री इस स्तोत्र को सुनती है, वह दीर्घजीवी पुत्रों को प्राप्त करती है।

इस स्तोत्र का पाठ करने वाला मनुष्य जिस वस्तु की कामना करता है, वह उसे देवी के चरणों की कृपा से निश्चित रूप में प्राप्त होती है।

॥ इति श्री कालिका कुलसर्वस्वे कालिका सहस्रनाम स्तोत्र समाप्तम्॥

श्री जगन्मंगल काली कवच

श्री भैरवी उवाच

काली पूजा श्रुतानाथ भावाश्च विविधाः प्रभो।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्व सूचितम्॥
त्वमेव शरणं नाथ त्राहि माम् दुखं संकटात्।
सर्व दुःख प्रशमनं सर्व पाप प्रणाशनम्॥
सर्व सिद्धि प्रदं पुण्यं कवचं परमाद्भुतम्।
अतो वै श्रोतिुमिच्छामि वद मे करुणानिधे॥

भावार्थ—हे प्रभो! हे नाथ! मैंने काली के पूजन तथा विविध भावों के विषय में सुना। अब मुझे पूर्व सूचित कवच को सुनने की इच्छा है। हे नाथ! मैं आपकी शरण में हूँ। आप मेरी दुःख और संकट से रक्षा कीजिए। करुणानिधे! सब दुःखों को नष्ट करने वाले, सब पापों को दूर करने वाले तथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समस्त सिद्धियों को देने वाले परम पवित्र अद्भुत कवच को सुनने की मेरी इच्छा है। आप कृपा पूर्वक कहिए।

श्री भैरव उवाच

रहस्यं श्रृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राण वल्लभे।
श्री जगन्मङ्गलं नाम कवचं मन्त्र विग्रहम्॥
पठयित्वा धारयित्वा त्रैलोक्यं मोहयेत्क्षणात्।
नारायणोऽपि यद्धृत्वा नारी भूत्वा महेश्वरम्॥
योगिनं क्षोभमनवत् यद्धृत्वा च रघूतमः।
वरदीप्तां जघानैव रावणादिनिशाचरान्॥
यस्य प्रसादादीशोऽपि त्रैलोक्य विजयी प्रभुः।
धनाधिपः कुबेरोऽपि सुरेशोऽभूच्छचीपतिः।
एवं च सकला देवाः सर्वसिद्धिश्वराः प्रिये॥

भावार्थ—श्री भैरव ने कहा—हे प्राण वल्लभे भैरवि! मैं तुमसे जगन्मंगल नामक कवच को कहता हूँ। इस कवच को पढ़ने तथा धारण करने वाला व्यक्ति तीनों लोकों को मोहित कर लेता है। यह कवच योगियों के मन में आनन्द भरने वाला तथा रावणादि निशाचरों को भी वर देने वाला है। इसके प्रभाव से ही विष्णु त्रैलोक विजयी हुए, कुबेर धनपति बने तथा इन्द्र देवताओं के स्वामी बने हैं। इसी कवच के प्रभाव से देवतागण समस्त सिद्धियों के स्वामी बन सके हैं।

ओं श्री जगन्मङ्गलस्याय कवचस्य ऋषिः शिवः।
छन्दोऽनुष्टुप् देवता च कालिका दक्षिणेरिता॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जगतां मोहने दुष्ट विजये भुक्ति-मुक्तिषु।
योषिदाकर्षणे चैव विनियोगः प्रकीर्तितः॥

भावार्थ—इस श्री जगन्मङ्गल कवच के ऋषि शिव हैं। छन्द अनुष्टप है, देवता दक्षिण कालिका हैं। संसार को मोहित करने, दुष्टों पर विजय पाने, युक्ति-मुक्ति तथा स्त्रियों के आकर्षण में इसका विनियोग है।

कवच प्रारम्भ

शिरो मे कालिका पातु क्रींकारैकाक्षरी परा।
क्रीं क्रीं क्रीं मे ललाटं च कालिका खड्गधारिणी॥
हूं हूं पातु नेत्रयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुति मम्।
दक्षिणे कालिके पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरि॥
क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हूं हूं पातु कपोलकम्।
बदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी॥
द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्यासुखप्रदा।
खड्गमुण्डधरा काली सर्वाङ्गमभितोऽवतु।
क्रीं हूं ह्रीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदयं मम॥
ऐं हूं ओं स्तन द्वन्द्वं ह्रीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम्॥
अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकतृका।
क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रींकारी पातु करौ षडक्षरी मम॥
क्रीं नाभिं मध्यदेशं च दक्षिणे कालिकाऽवतु।
क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठं च कालिका सा दशाक्षरी॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्रीं मे गुह्यं सदापातु कालिकायै नमस्ततः।
सप्ताक्षरी महाविद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता॥
ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके हूं हूं पातु कटिद्वयम्।
काली दक्षाक्षरीविद्या स्वाहान्ता मामरूयुग्मकम्॥
ओं क्रीं क्रीं मे स्वाहा पातु कालिका जानुनी सदा।
काली हृन्नामविद्येयं चतुर्वर्गफलप्रदा॥
क्रीं हूं ह्रीं पातु सा गुल्फं दक्षिणे कालिकेऽवतु।
क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरीमम॥
खड्गमुण्डधरा काली वरदाभयधारिणी।
विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वाङ्गमभितोऽवतु॥
काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी।
विपचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्ता धनत्विषा॥
नीला घना बलाका च मात्रा मुद्रा मिता च माम्।
एताः सर्वाः खड्गधरा मुण्डमाला विभूषणाः॥
रक्षन्तु माँ दिग्विदिक्षु ब्राह्मी नारायणी तथा।
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चा पराजिता॥
वाराही नारसिंही च सर्वाश्रयामित भूषणाः।
रक्षन्तु स्वायुधैर्दिक्षु मां यथा तथा॥

भावार्थ—स्पष्ट है कि इसमें श्रीमद्दक्षिण कालिका से रक्षा की प्रार्थना की गई है।

इति ते कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम्।
श्री जगन्मङ्गलं नाम महामन्त्रौघविग्रहम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रैलोक्याकर्षणं ब्रह्मन्! कवचं मन्मुखोदितम्।
गुरु पूजां विधाऽयाथ विधिवत्प्रपठेत्ततः॥
कवचं त्रिःसकृद्वापि यावज्जीवं च वा पुनः।
एतच्छतार्धमावृत्य त्रैलोक्य विजयी भवेत्॥
त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव कवचस्य प्रसादतः।
महाकविर्भवेन्मासात् सर्वसिद्धिश्वरो भवेत्॥
पुष्पाञ्जलीन् कालिकायै मूलेनैव पठेत्सकृत्।
शतवर्षसहस्त्रांणां पूजायाः फलमाप्नुयात्॥
भूर्जे विलिखितं चैतत् स्वर्णस्थं धारयेद्यदि।
शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा धारणाद्बुद्धः॥
त्रैलोक्यं मोहयेत्क्रोधात् त्रैलोक्यं चूर्णयेत्क्षणात्।
पुत्रवान् धनवान् श्रीमान् नानाविद्यानिधिर्भवेत्॥
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्र स्पर्शनात्ततः।
नाशमायान्ति सर्वत्र कवचस्यास्य कीर्तनात्॥
मृतवत्सा च या नारी बन्ध्या वा मृतपुत्रिणी।
कण्ठे वा वामबाहौ वा कवचस्यास्यधारणात्॥
वह्वपत्या जीववत्साभवत्येव न संशयः।
न देयं परशिष्येभ्यो ह्यभैक्तेभ्यो विशेषतः॥
शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्यो ह्यन्यथा मृत्युमाप्नुयात्।
स्पर्द्धामुद्धय कमला वाग्देवी मन्दिरे सुखे॥
पौत्रान्तं स्थैर्यमास्थाय निवसत्येव निश्चितम्।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्दक्षकालिकाम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शतलक्षं प्रजप्त्वाऽपि तस्य विद्या न सिद्ध्यति।
सहस्त्रधातमाप्नोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्॥
जेपदादौ जपेदन्ते सप्तवाराण्यनक्रमात्।
नोधत्य यत्र कुत्रापि गोपनीयं प्रयत्नतः॥
लिखित्वा रचपार्णत्रे वै पूजाकाले तु साधकः।
मूर्ध्नि धार्य प्रयत्नने विद्यारत्नं प्रपूजयेत्॥

संक्षिप्त भावार्थ—यह श्री जगन्मंगल नामक देवों का कवच परम अद्भुत है। यह तीनों लोकों का आकर्षण करने वाला है। गुरु की पूजा करने के उपरान्त इसका पाठ करना चाहिए। इस कवच का पाठ करने वाला व्यक्ति त्रैलोक्य विजयी होता है। वह त्रैलोक्य को मोहित करने वाला, महाकवि तथा समस्त सिद्धियों का स्वामी होता है। कालिका देवी को पुष्पाँजलि समर्पित करके जो व्याक्ति इस कवच का पाठ करता है, वह एक लाख वर्षों तक पूजा करने का फल प्राप्त करता है। इस कवच को भोजपत्र पर लिखकर तथा स्वर्ण के ताबीज में भरकर शिखा, दाई भुजा अथवा कण्ठ में धारण करने वाला व्यक्ति तीनों लोकों को मोहित कर लेता है और पुत्रवान, धनवान, श्रीमान तथा अनेक विद्याओं एवं सम्पत्तियों का भण्डार हो जाता है। ब्रह्मास्त्र आदि शस्त्र उसके शरीर का स्पर्श नहीं करते, वह इस कवच का पाठ करने मात्र से ही नष्ट हो जाते हैं। जो मृतवत्सा, वन्ध्या अथवा अपुत्रिणी स्त्री इस कवच को बाई भुजा अथवा कण्ठ में धारण करती है, वह अनेक पुत्रों की माता होती है—इसमें सन्देह नहीं है। यह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कवच पराये शिष्य को नहीं देना चाहिए। विशेषकर अभक्तों को तो देना ही नहीं चाहिए। इस कवच को जाने बिना यदि दक्षिण कालिका के मन्त्र का एक लाख बार जप किया जाय तो भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती। ऐसा व्यक्ति सहस्त्रों आघातों को सहन करता है तथा असमय में ही मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होता है। इसका आदि तथा अन्त में सात बार जप करना चाहिए। यह कवच जिस किसी को नहीं बताना चाहिये तथा इसे प्रयत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिए। साधक को चाहिए कि वह इस कवच को स्वर्ण पत्र पर लिखकर पूजा के समय समक्ष रख ले। इसके मस्तक पर धारने से साधक को श्रेष्ठ विद्याओं की प्राप्ति होती है।

दक्षिण-कालिका पटलम्

ॐ अथ कालीमनून्वक्ष्ये सद्योवाक् सिद्धिदायकान्।
आराधितैर्यैः सर्वेष्टं प्राप्नुवंति जनाभुवि ॥ १ ॥
ब्रह्मरेफौ वामनेत्र-चंद्रारूढौ मनुर्मताः।
एकाक्षरो महाकाल्याः सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ २ ॥
बीजं दीर्घयुतश्चक्री पिनाकी नेत्रसंयुतः।
क्रोधीशो भगवान् स्वाहा खंडार्णो मंत्र ईरितः ॥ ३ ॥
काली कूर्चं तथा लज्जा त्रिवर्णो मनुरीरितः।
हुँ फट् ततश्च- पंचार्णःस्वाहांतः सप्तवर्णकः ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कूर्चद्वयं त्रयं काल्या मायायुग्मं च दक्षिणो।
कालिके पूर्वबीजानि स्वाहामंत्रो वशीकृतौ॥ ५॥
मंत्रराजे पुनः प्रोक्तं बीजसप्तक-मुत्सृतेत्।
तिथिवर्णो महामंत्र उपास्तिः पूर्ववन्मता॥ ६॥
न चाऽत्र सिद्धि-साध्यादि-शोधनं मनसाऽपिवा।
न यत्नातिशयः कश्चित्पुरश्चर्यानिमित्त कः॥ ७॥
विद्याराज्ञीस्मृतेरेव सिध्यष्ट-कमवाप्नुयात्।
भैरवोऽस्य ऋषिश्छन्दो उष्णिक्-काली तु देवता॥ ८॥
बीजं माया दीर्घवर्मशक्तिरुक्ता मनीषिभिः।
षड्दीर्घाढ्याद्यबीजेन विद्याया अंगमीरितम्॥ ९॥
मातृकान् पंचधा भक्त्वा वर्णान् दशदशक्रमात्।
हृदये भुजयोः पादद्वये मन्त्री प्रविन्यसेत्॥
व्यापकं मनुना कृत्वा ध्यायेच्चेतसि कालिकां॥१०॥
सद्यश्छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रतीं,
घोरास्यां शिरसा स्रजा सुरुचिरामुन्मत्तकेशावलीम्।
सृक्का-ऽसृक्-प्रवहांश्मशानं-निलयांश्रुत्योः शवालिङ्कृतीं,
श्यामाङ्गी कृतमेखलां शवकरैर्देवीं भजेत्कालिकाम्॥११॥
एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं जुहुयात्तद्दशांशतः।
प्रसूनैः करवीरोत्थैः पूजायन्त्रमथोच्यते॥१२॥
आदौ षटकोणमारच्य त्रिकोणत्रितयं ततः।
पद्ममष्टदलं बाह्ये भूपुरं तत्र पूजयेत्॥१३॥
जयाख्या विजया पश्चादजिता चापराजिता।
नित्या विलासिनी चाऽपि दोग्धा घोरा च मंगला॥१४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पीठशक्तय एताः स्युः कालिकायोगपीठतः।
आत्मनो हृदयांतोऽयं मयादिपीठमंत्रकः ॥१५॥
अस्मिन् पीठे यजेद्देवीं वशरूपशि वास्थितां।
महाकालरताशक्तां शिवभिर्दिक्षु वेष्टिताम् ॥१६॥
अंगानि पूर्वमाराध्य षट्पत्रेषु समर्चयेत्।
कालीं कपालिनीं कुल्वां कुरुकुल्वां विरोधिनीम् ॥१७॥
विप्रचित्तां तु संपूज्य नवकोणेषु पूजयेत्।
उग्रामुग्रप्रभ दीप्तां नीलां घनां बलाकिकाम् ॥ १८॥
मात्रां मुद्रां तथाऽमित्रां पूज्याः पत्रेषु मातरः।
पद्मस्याऽष्टसु नेत्रेषु ब्राह्मी नारायणी तथा ॥१९॥
माहेश्वरी च चामुंडा कौमारी चाऽपराजिता।
वाराही नारसिंही च पुनरेताश्च भूपुरे ॥२०॥
भैरवीं महदाद्यन्तां सिंहाद्यां धूम्रपूर्विकाम्।
भीमोन्मत्तादिकां चाऽपि वशीकरणभैरवीम् ॥२१॥
मोहनाद्यां समाराध्य शक्रादिन्यायुधान्यपि।
एवमाराधिता काली सिद्धा भवति मंत्रिणाम् ॥२२॥
ततः प्रयोगान् कुर्वीत महाभैरवभाषितान्।
आत्मनोऽर्थं परस्यार्थं क्षिप्रसिद्धिप्रदायकान् ॥२३॥
स्त्रीणां प्रहारं निन्दां च कौटिल्यं चाऽप्रियंवच।
आत्मनो हितमन्विच्छन् काली भक्तो विवर्जयेत् ॥२४॥
सुदृशो मदनावासं तस्या यः प्रजपेन्मनुम्।
अयुतं सोऽचिरादेव वाक्पतेः समतामियात् ॥२५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिगंबरो मुक्तकेशः श्माशानस्थो धिया मिति।
जपेदयुमेतस्य भवेयुः सर्वकामनाः ॥२६॥
शवहृदयमारुह्य निर्वासाः प्रेतभूगतः।
अर्कपुष्पसहस्त्रेणाभ्यक्तेन स्वीयरेतसा ॥२७॥
देवीं यः पूजयेद् भक्त्या जपन्नेकैकशो मनुम्।
सोऽचिरेणैव कालेन धरणी-प्रभुतां व्रजेत् ॥२८॥
रजःकीर्णं भगं नार्या ध्यायन् योऽयुतमाजपेत्।
स कवित्वेन रम्येण जनान् मोहयति ध्रुवम् ॥२९॥
त्रिपञ्चारे महापीठे शवस्य हृदि संस्थिताम्।
महाकालेन देवेन नारयुद्धं प्रकुर्वतीम् ॥३०॥
तां ध्यायन् स्मेरवदनां विद्धत्सुरतं स्वयम्।
जपेत् सहस्त्रमपि यः स शंकरसमो भवेत् ॥३१॥
अस्थि-लोम-त्वचायुक्तं मांसं मार्जार-मेषयोः।
उष्ट्रस्य महिषस्यापि बलिं यस्तु समर्पयेत् ॥३२॥
भूताष्टभ्यो मध्यरात्रे वश्याः स्युः सर्वजन्तवः।
विद्या-लक्ष्मी-यशः-पुत्रैः सुचिरं सुखमेधते ॥३३॥
यो हविष्याशनरतो दिवा देवीं स्मरन् जपेत्।
नक्तं निधूवनासक्तो लक्षं स स्याद् धरापतिः ॥३४॥
रक्तां भोजैर्भवेन् मैत्री धनैर्जयति वित्तपम्।
बिल्वपत्रैर्भवेद्राज्यं रक्तपुष्पैर्वशीकृतिः ॥३५॥
असृजा महिषादीनां कालिकां यस्तु तर्पयेत्।
तस्य स्युरचिरादेव करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥ ३६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यो लक्षं प्रजपेन् मन्त्रं शवमारुह्य मन्त्रवित्।
तस्य सिद्धो मनुः सद्यः सर्वेप्सितफलप्रदः ॥३७॥
तेनाऽश्वमेधप्रमुखैर्यागैरिष्ट्वा सुजन्मना।
दत्तं दानं तपस्तप्तं पूजेत् यस्तु कालिकाम्॥३८॥
ब्रह्मा विष्णुः शिवो गौरी लक्ष्मीर्गणपति-रविः ;
पूजिताः सकला देवा यः कालीं पूजयेत् सदा॥३९॥

॥ श्री दक्षिणकालिकापटलं सम्पूर्णम् ॥

इस दक्षिणकालिका पटल द्वारा दक्षिणकालिका की आराधना करके अपने समस्त मनोरथों को पूर्ण किया जा सकता है। क्योंकि इसके श्लोक में सात बीज वाला दक्षिण कालिका का मन्त्रराज संज्ञक दिया गया है। जो जपकर्ता के लिए अतिश्रेष्ठ है। इस दक्षिण कालिका मन्त्र के द्वारा महाकाली का ध्यान व काली के मन्त्र का एक लाख जप और उसका दशांश हवन भी किया जा सकता है। अपने कल्याण की कामना करने वाले प्राणियों को इस स्तोत्र का पाठ प्रतिदिन ही करना चाहिए। क्योंकि इसके सत्ताइसवें श्लोक से स्पष्ट होता है कि मरे हुए व्यक्ति के शव के हृदय में विराजमान होकर श्मशानवासिनी नग्न अवस्था में अपने वीर्य से मन्दार के हजार पुष्पों को सिंचन करने वाली है। इसके इकतीसवें श्लोक से पूर्णतः सिद्ध होता है कि जो भी प्राणी काली मन्त्र का एक हजार जप पवित्रता एवं शुद्धता से करता है वह भगवान् शंकर के समान हो जाता है। इसमें किसी भी प्रकार का संशय नहीं है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इसके अतिरिक्त दक्षिण कालिका का उपासक यदि लाल कमल के पुष्पों से देवी की उपासना करता है तो वह शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है और उसे ब्रह्मा, विष्णु, शिव, पार्वती, लक्ष्मी, गणेश तथा सूर्य आदि सभी देवताओं के पूजन का फल प्राप्त होता है।

श्री काली शतनाम स्तोत्र

भैरव उवाच—

शतनाम प्रवक्ष्यमि कालिकाया वरानने!।
यस्य प्रपठनाद् वाग्मी सर्वथा विजयी भवेत्॥ १॥
काली कपालिनी कान्ता कामदा कामसुन्दरी।
कालिरात्रिः कालिका च कालभैरवपूजिता॥ २॥
कुरुकुल्ला कामिनी च कामनीयस्वभाविनी।
कुलीना कुलकर्त्री च कुलवर्त्मप्रकाशिनी॥ ३॥
कस्तूरीरसनीला च काम्या कामस्वरूपिणी।
ककारवर्णनिलया कामधेनुः करालिका॥ ४॥
कुलकान्ता करालास्या कामार्ता च कलावती।
कृशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिनी॥ ५॥
कुलजा कुलकन्या च कलहा कुलपूजिता।
कामेश्वरी कामकान्ता कुञ्जरेश्वरगामिनी॥ ६॥
कामदात्री कामहर्त्री कृष्णा चैव कपर्दिनी।
कुमुदा कृष्णदेव च कालिन्दी कुलपूजिता॥ ७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

काश्यपी कृष्णमाता च कुलिशाङ्गी कला तथा।
क्रींरूपा कुलगम्या च कमला कृष्णपूजिता॥ ८॥
कृशाङ्गी किन्नरी कर्त्री कलकण्ठी च कार्तिकी।
कम्बुकण्ठी कौलिनी च कुमुदा कामजीविनी॥ ९॥
कुलस्त्री कीर्त्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुलपालिका।
कामदेवकला कल्पलता कामाङ्गवर्द्धिनी॥१०॥
कुन्ती च कुमुदप्रीता कदम्ब-कुसुमोत्सुका।
कादम्बिनी कमलिनी कृष्णानन्दप्रदायिनी॥११॥
कुमारीपूजनरता कुमारीगणशोभिता।
कुमारीरञ्जनरता कुमारीव्रतधारिणी॥१२॥
कंकाली कमनीया च कामशास्त्रविशारदा।
कपालखट्वाङ्गधरा कलिभैरवरूपिणी॥१३॥
कोटरी कोटराक्षी च काशी कैलाशवासिनी।
कात्यायिनी कार्यकरी काव्यशास्त्रप्रमोदिनी॥१४॥
कामाकर्षणरूपा च कामपीठनिवासिनी।
कङ्गिनी काकिनी कुत्सिता कलहप्रिया॥१५॥
कुण्डगोलोद्भवप्राणा कौशिकी कीर्तिवर्द्धिनी।
कुम्भस्तनी कटाक्षा च काव्या कोकनदप्रिया॥१६॥
कान्तारवासिनी कान्तिः कठिना कृष्णवल्लभा।
इति ते कथितं देवि! गुह्याद् गुह्यातरं परम्॥१७॥
प्रपठेद् य इदं नित्यं कालीनाम शताष्टकम्।
त्रिषु लोकेषु देवेशि! तस्याऽसाध्यं न विद्यते॥१८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रातःकाले च मध्याह्ने सायाह्ने च सदा निशि।
यः पठेत् परया भक्त्या कालीनाम शताष्टकम्॥१९॥
कालिका तस्य गेहे च संस्थानं कुरुते सदा।
शून्यागारे श्मशाने वा प्रान्तरे जलमध्यतः॥२०॥
वह्निमध्ये च सङ्ग्रामे तथा प्राणास्य संशये।
शताष्टकं जपन्मन्त्री लभते क्षेममुत्तमम्॥२१॥
कालीं संस्थाप्य विधिवत् स्तुत्वा नामशताष्टकैः।
साधकः सिद्धिमाप्नोति कालिकायाः प्रसादतः॥२१॥

॥ कालिका-शतनाम-स्तोत्र समासम्॥

कालिका शतनाम स्तोत्र में काली के एक सौ आठ नामों का समावेश है। यह काली के अत्यन्त गुप्त एक सौ आठ नाम हैं। जो भी प्राणी काली के इन एक सौ आठ नामों का प्रतिदिन पाठ करता है, उसे इस संसार में किसी भी वस्तु की कमी नहीं होती। इसके पाठ करने के लिये तीन काल बताये गये हैं। यथा—प्रातःकाल, मध्याह्न काल व सायंकाल। इन तीनों कालों में जो भी प्राणी त्रिकाल काली के एक सौ आठ नामों का श्रद्धा एवं भक्ति से अपने गृह में पाठ करता है उसके गृह में काली सदैव निवास करती है। बड़ी से बड़ी विपत्ति एवं कठिनाइयों के समय भी जो भी प्राणी क्रम से भगवती काली के इन नामों का पाठ करते हैं। वह प्राणी संसार में कीर्ति यश, वैभव, धन-धान्य को प्राप्त करते हुए सदैव सुखी जीवन व्यतीत करते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री काली-हृदयम्

श्री महाकाल उवाच—

महाकौतूहलस्तोत्रं हृदयाख्यं महोत्तमम्।
शृणु प्रिये! महोगोप्यं दक्षिणायाः सुगोपितम्॥ १॥
अवाच्यमपि वक्ष्यामि तव प्रीत्या प्रकाशितम्।
अन्येभयः कुरु गोप्य च सत्यं-सत्यं च शैलजे॥ २॥

श्रीदेव्युवाच—

कस्मिन् युगे समुत्पन्नं केन स्तोत्रं कृतं पुरा?।
तत्सर्वं कथ्यतां शम्भो! महेश्वर दयानिधे!॥ ३॥

श्रीमहाकाल उवाच—

पुरा प्रजापतेः शीर्षश्छेदनं कृतवानहम्।
ब्रह्म-हत्याकृतैः पापैर्भैरवत्वं ममागतम्॥ ४॥
ब्रह्महत्याविनाशाय कृतं स्तोत्रं मया प्रिये!।
कृत्याविनाशकं स्तोत्रं ब्रह्महत्यापहारकम्॥ ५॥

विनियोगः—

ॐअस्य श्रीदक्षिणकाल्या हृदयस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीमहाकालऋषिरुष्णिक्छन्दः श्रीदक्षिणकालिका देवता, क्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, नमः कीलकं, सर्वत्र सदा जपे विनियोगः।

हृदयादिन्यासः—

ॐ क्रां हृदयाय नमः, ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्रूं शिखायै वषट्, ॐ क्रैं कवचाय हुम्, ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ क्रः अस्त्राय फट्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्यानम्—

ध्यायेत कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां लल्लज्जिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम्॥ १॥
नीलोत्पलदलप्रख्यां शत्रुसङ्घविदारिणीम्।
नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं वरदं तथा॥ २॥
बिभ्राणां रक्तवदना दंष्ट्रालीं घोररूपिणीम्।
अट्टट्टाहासनिरतां सर्वदा च दिगम्बराम्॥ ३॥
शवासनस्थितां देवीं मुण्डमालाविभूषिताम्।
इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु हृदयं पठेत्॥ ४॥
ॐ कालिका घोररूपाद्या सर्वकामफलप्रदा।
सर्व-देवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे॥ ५॥
ह्रीं-ह्रीं स्वरूपिणी श्रेष्ठा त्रिषु लोकेषु दुर्लभा।
तव स्नेहान् मयाख्यातं न देयं यस्य कस्यचित्॥ ६॥
अथ ध्यान प्रवक्ष्यामि निशामय परात्मिके।
यस्य विज्ञानमात्रेण जीवन्मुक्तो भविष्यति॥ ७॥
नागयज्ञोपवीतां च चन्द्रार्द्धकृतशेखराम्।
जटाजूटां च सञ्चिन्त्य महाकालसमीपगाम्॥ ८॥
एवं न्यासादयः सर्वे ये प्रकुर्वन्ति मानवः।
प्राप्नुवन्ति च ते मोक्षं सत्यं-सत्यं वरानने!॥ ९॥
यन्त्रं शृणु परं देव्याः सवार्थ सिद्धिदायकम्।
गोप्याद् गोप्यतरं गोप्यं गोप्याद् गोप्यतरं महत्॥१०॥
त्रिकोणं पञ्चकं चाऽष्टकमलं भूपुरान्वितम्।
मुण्ड-पंक्तिं च ज्वालां च कालियन्त्रं सुसिद्धिदम्॥११॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मन्त्रं तु पूर्व-कथितं धारयस्व सदा प्रिये!।
देव्या दक्षिण-काल्यास्तु नाममालां निशामय ॥१२॥
काली दक्षिणकाली च कृष्णरूपा परात्मिका।
मुण्डमाली विशालाक्षी सृष्टिसंहार कारिका ॥१३॥
स्थितिरूपा महामाया योगिनिद्रा भगात्मिका।
भागसर्पिः पानरता भगोद्योता भगाङ्गजा ॥१४॥
आद्या सदा नवा घोरा महातेजाः करालिका।
प्रेतवाहा सिद्धिलक्ष्मीरनिरुद्धा सरस्वती ॥१५॥
एतानि नाममाल्यानि ये पठन्ति दिने-दिने।
तेषां दासस्य दासोऽहं सत्यं-सत्यं महेश्वरि! ॥१६॥
कालीं कालहरां देवीं कंकालबीजरूपिणीम्।
काकरूपां कालातीतां कालिकां दक्षिणां भजे ॥१७॥
कुण्डगोलप्रियां देवीं स्वयम्भूकुसुमेरताम्।
रतिप्रियां महारौद्रीं कालिकां प्रणामम्यहम् ॥१८॥
दूतीप्रियां महादूतीं दूतीयोगेश्वरी पराम्।
दूतीयोगोद्भवरतां दूतीरूपां नमाम्यहम् ॥१९॥
क्रीं मन्त्रेण जलं जप्त्वा सप्तधा सेचनने तु।
सर्वे रोगा विनश्यन्ति नाऽत्र कार्या विचारणा ॥२०॥
क्रीं स्वाहान्तै-र्महामन्त्रैश्चन्दनं साधयेत्ततः।
तिलकं क्रियते प्राज्ञैर्लोको वश्यो भवेत् सदा ॥२१॥
क्रीं-हूं-ह्रीं मन्त्रजप्तेन चाऽक्षत सप्तभिः प्रिये!।
महाभयविनाशश्च जायते नाऽत्र संशयः ॥२२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्रीं-ह्रीं-हूं-स्वाहामन्त्रेण श्मशानाऽग्निं च मन्त्रयेत्।
शत्रोर्गृहे प्रतिक्षिप्त्वा शत्रोमृत्युर्भविष्यति ॥२३॥
हूं-ह्रीं-क्रीं चैव उच्चाटे पुष्पं संशोध्य सप्तधा।
रिपूणां चैव चोच्याटन्नयत्येव न संशयः ॥२४॥
आकर्षणे च क्रीं-क्रीं-क्रीं जप्त्वाऽक्षतं प्रतिक्षिपेत्।
सहस्त्रयोजनस्था च शीघ्रमागच्छति प्रिये! ॥२५॥
क्रीं-क्रीं-क्रीं-हूं-हूं-ह्रीं ह्रीं च कज्जलं शोधितं तथा।
तिलकेन जगन्मोहं सप्तधा मन्त्रमाचरेत् ॥२६॥
हृदयं परमेशानि सर्वपापहरं परम्।
अश्वमेधादि-दानानां कोटि-कोटिगुणोत्तरम् ॥२७॥
कन्यादानादि-दानानां कोटि-कोटिगुणं फलम्।
दूत-यागादियागानां कोटि-कोटिफलं स्मृतम् ॥२८॥
गङ्गादिसर्वतीर्थाणां फलं कोटिगुणं स्मृतम्।
एकधा पाठमात्रेण सत्यं-सत्यं मयोदितम् ॥२९॥
कौमारी स्वेष्टरूपेण पूजां कृत्वा विधानतः।
पठेत् स्तोत्रं महेशानि! जीवन्मुक्ताः स उच्यते ॥३०॥
रजस्वलाभगं दृष्ट्वा पठेदेकाग्र-मानसः।
लभते परमं स्थानं देवीलोके वरानने! ॥३१॥
महादुःखे महारोगे महासंकटे दिने।
महाभये महाघोरे पठेत् स्तोत्र महोत्तमम्॥
सत्यं-सत्यं पुनः सत्यं गोपयेनू मातृजारवत् ॥३२॥

॥ श्री काली-हृदयं समाप्तम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उपरोक्त काली हृदय नामक स्तोत्र समस्त पापों को नष्ट करते हुए अनेक प्रकार के मनोवांछित फल जपकर्ता को प्रदान करता है। कन्यादान तथा देवी-देवताओं के यज्ञों से भी श्रेष्ठ इसे कहा गया है। क्योंकि जो भी प्राणी इस कालीहृदय का तीनों कालों में से मात्र एक ही काल में केवल एक बार श्रद्धा एवं भक्ति से इसका पाठ करता है उसे गंगादि समस्त तीर्थों से भी श्रेष्ठ फल प्राप्त होते हैं। प्राणी चाहे जितने भी दुःख, कष्ट, महामारी एवं असाध्य रोगों से घिरा हो, यदि वह इस स्तोत्र का नियम से एवं श्रद्धा से पाठ करता है तो उसके सभी प्रकार के रोगों एवं कष्टों की निवृत्ति निःसंदेह होती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाकाल प्रणीत काली कर्पूर स्तोत्रम्

विनियोग:

ॐ अस्य श्रीकर्पूरस्तवराजस्य महाकाल ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदक्षिणाकालिका देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, अव्यक्तं कीलकं, श्रीदक्षिणाकालिका-देव्याप्रसादसिद्ध्यर्थं तत्तसम्पूर्णकामना सिद्धये वा विनियोगः।

कर्पूरं मध्यमा-ऽन्त्य-स्वर-पररहितं सेन्दुवामाक्षियुक्तं
बीजं ते मातरेतत्रिपुर-हरवधु! त्रिष्कृतं ये जपन्ति।
तेषां गद्यानि-पद्यानि च मुखकुहरादुल्लसन्तयेव वाचः
स्वच्छन्दं ध्यान्त-धाराधर-रुचिरुचिरे सर्वसिद्धिं गतानाम्॥ १॥
ईशानः सेन्दुवामश्रवणपरिगतो बीजमन्यन् महेशि!
द्वन्द्वं ते मन्दचेता यदि जपति जनो वारमेकं कदाचित्।
जित्वा वाचामधीसं धनदमपि चिरं मोहयन्नम्बुजाक्षी
वृन्दं चन्द्रार्धचूडे प्रभवति स महाघोरशावावतंसे॥ २॥
ईशो वैश्वनारस्थः शशधरविलसद् वामनेत्रेण युक्तो
बीजं ते द्वन्द्वमन्यद् विगलितचिकुरे कालिके ये जपन्ति।
द्वेष्टारं घ्नन्ति ते च त्रिभुनमभितो वश्यभावं नयन्ति
सृक्क-द्वन्द्वास्त्र-धाराद्वयधर-वदनेदक्षिणे कालिकेति॥ ३॥
ऊर्ध्वं वामे कृपाणं कर-कमलतले छिन्नमुण्डं ततोऽधः
सव्येऽभीतिं वरं च त्रिजगदघहरे दक्षिणे कालिके च।
जप्त्वैतन् नाम ये वा तव विमलतनुं भावयन्त्ये तदम्ब!
तेषामष्टौ करस्थाः प्रकटितरदने सिद्धयस्त्र्यम्बकस्य॥ ४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वर्गाद्यं वह्निसंस्थं विधुरतिललितं तत्त्रयं कूर्चयुग्मं
लज्जाद्वन्द्वं च पश्चात् स्मितमुखि तदधष्टद्वयं योजयित्वा।
मातर्ये त्वां जपन्ति स्मरहरमहिले भावयन्तः स्वरूपं
ते लक्ष्मीलास्यलीला-कमलदलदृशः कामरूपा भवन्ति ॥ ५ ॥
प्रत्येकं वा द्वयं वा त्रयमपि च परं बीजमत्यन्तगुह्यं
त्वन् नाम्ना योजयित्वा सकलमपि सदा भावयन्तो जपन्ति।
तेषां नेत्रारविन्दे विहरति कमला वक्त्रशुभ्रांशुविम्बे
वाग्देवी, देवि! मुण्ड-स्त्रगतिशय-लसत्-कण्ठि-पीनस्तनाढ्य॥ ६ ॥
गतासूनां बाहु-प्रकरकृतकाञ्ची-परिलसन्
नितम्बां दिग्वस्त्रां त्रिभुवनविधात्रीं त्रिनयनाम्।
श्मशानेस्थे तल्पे शवहृदि महाकलसुरत-
प्रसक्तां त्वां ध्यायन् जननि जडचेता जडचेता अपि कविः ॥ ७ ॥
शिवाभिर्घोराभिः शवनिवहमुण्डास्थि-निकरैः
परं सङ्कीर्णायां प्रकटितचितायां हरवधूम्।
प्रविष्टां सन्तुष्टामुपरिसुरतेनातियुवतीं
सदा त्वां ध्यायन्ति क्वचिदपि न तेषां परिभवः ॥ ८ ॥
वदामस्ते किं वा जननि! वयमुच्चैर्जडधियो
न धाता नापीशो हरिरपि न ते वेत्ति परमम्।
तथापि त्वद् भक्तिर्मुखरयति चास्माननमिते
तदेतत् क्षन्तव्यं न खलु पशुरोषः समुचितः ॥ ९ ॥
समन्तादापीन-स्तन-जघन दृगयौवनवती-रतासक्तो
नक्तं यदिजपति भक्तस्तव मनुम्।
विवासास्त्वां ध्यायन् गलित-चिकुरस्तस्य वशगाः
समस्ताः सिद्धौधा भुवि चिरतरं जीवति कविः ॥१०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समाः स्वस्थीभूतां जपति विरपीतां यदि सदा
विचिन्त्य त्वां व्यायन्नतिशय-महाकाल-सुरताम्।
तदा तस्य क्षोणीतल-विहरमाणस्य विदुषः
कराम्भोजे वश्या हरवधु महासिद्धिनिवहाः ॥११॥
प्रसूते संसारं जननि! जगतीं पालयति च
समस्तं क्षित्यादि प्रलयसमये संहरति च।
अतस्त्वां धाताऽपि त्रिभुवनपतिः श्रीपतिररति
महेशोऽपि प्रायः सकलमपि किं स्तौति भवतीम्॥१२॥
अनेके सेवन्ते भवदधिक-गीर्वाण-निवहान्
विमूढास्ते मातः! किमपि नहि जानन्ति परमम्।
समाराध्यामाद्यां हरिहरविरंच्यादि-विबुधैः
प्रपन्नोऽस्मि स्वैरं रतिरसमहानन्द-निरताम्॥१३॥
धरित्री कीलालं शुचिरपि समीरोऽगननं
त्वमेका कल्याणी गिरिशरमणी कालि सकलम्।
स्तुतिः का ते मातर्निजकरुणया मामगितकं
प्रसन्ना त्वं भूया भवमनु न भूयान् मम जनुः॥१४॥
श्मशानस्थः स्वस्थो गलितचिकुरो दिक् पटधरः
सहस्र त्वर्काणां निजगलितवीर्येण कुसुमम्।
जपंस्तत् प्रत्येकं मनुमपि तव ध्याननिरतो
महाकलि! स्वैरं स भवति धरित्री परिवृढः॥१५॥
गृहे संमार्जन्या परिगलितवीर्यं ही चिकुरं
समूलं मध्याह्ने वितरति चितायां कुजदिने।
समुच्चार्यप्रेम्णा मनुपमपि सकृत् कालि! सततं
गजारूढो याति क्षितिपरिवृढः सत् कविवरः॥१६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वपुष्पैराकीर्णं कुसमधनुषो मन्दिरमहो
पुरो ध्यायन् ध्यायन् यदि जपति भक्तस्तव मनुम्।
स गन्धर्वश्रेणीपतिरपि कवित्वामृतनदी-
नदीनः पर्यन्ते परमपदलीनः प्रभवति ॥१७॥
त्रिपञ्चारे पीठे शवशिवहृदि स्मेरवदनां
महाकालेनोच्चैर्मदनरस-लावण्य नितराम्।
समासक्तो नक्तं स्वयमपि रतानन्दनिरतो
जनो या ध्यायेत् त्वामपि जननि! स स्यात् स्मरहरः ॥१८॥
सलोमास्थि स्वैरं पललमपि मार्जारमसिते!
पर वौष्ट्र मैष नरमहिषयोश्छागपपि वा।
बलिं ते पूजायामपि वितरतां मत्यवसतां
सतां सिद्धिः सर्वा प्रतिपदमपूर्वा प्रभवति ॥१९॥
वशी लक्षं मन्त्रं प्रजपति हविष्याशनरतो
दिवा मातर्युष्मच्चरण-कमलध्यान-निरतः।
परं नक्तं नग्नो निधुवन-विनोदेन च मनुं
जपेल्लक्षं स स्यात् स्मरहरसमानः क्षितितले ॥२०॥
इदं स्तोत्रं मातस्तव मनुसमुद्धारणमनु
स्वरूपाख्यं पादाम्बुज-युगल-पूजाविधियुतम्।
निशार्धे वा पूजासमयमधि वा यस्तु पठति
प्रलापस्तस्याऽपि प्रसरति कवित्वामृतरसः ॥२१॥
कुरङ्गाक्षीवृन्दं तमनुसरति प्रमतरलं
वशस्तस्य क्षोणीपतिरपि कुबेरप्रतिनिधिः।
रिपुः कारागारं कलयति च तं केलिकलया
चिरं जीवन्मुक्तः प्रभवति स भक्तः प्रतिजनुः ॥२२॥

॥ श्री महाकालप्रणीतं काली कर्पूरस्तोत्रं समाप्तं ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उपरोक्त काली कर्पूरस्तोत्रं श्रीमहाकाल द्वारा रचित है। इस स्तोत्र का जो भी प्राणी शुद्धता एवं पवित्रता से प्रतिदिन प्रातःकाल में अथवा निशाकाल में एकाग्रचित्त होकर श्रद्धा व भक्ति से पाठ करता है उसके विरोधी उसके समक्ष नतमस्तक होते हैं। धनवान् से धनवान व्यक्ति भी उस व्यक्ति के समक्ष सदैव नतमस्तक हो जाते हैं। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस स्तोत्र का पाठ करने वाला प्राणी दीर्घायु होते हुए संसार के सभी सुख साधनों को प्राप्त करता है।

श्री काली अपराध क्षमापन स्तोत्रम्

प्राग्-देहस्थो यदाऽदं तव चरणयुगं नाश्रितो नाऽर्चितोऽहं
तेनाद्याकीर्तिवर्गै-र्जठरज-दहनैबार्ध्यमानो बलिष्ठैः।
क्षिप्त्वा जन्मान्तरान्नः पुनरिह भविता क्वाश्रयः क्वाऽपि सेवा
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥ १॥

बाल्ये बालाऽभिलाषै-र्जडित-जडमति-र्बाललीलाप्रसक्तो
न त्वां जानामि मातः! कलिकलुषहरां भोग-मोक्षप्रदात्रीम्।
नाचारो नैव पूजा न च यजनकथा च स्मृतिनैव सेवा।
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥ २॥

प्राप्तोऽहं यौवनं चेद् विषधर-सदृशैरिन्द्रियैर्दृष्टगात्रो
नष्टप्रज्ञः परस्त्रीपरधनहरणे सर्वदा साऽभिलापः।
त्वत् पादाम्भोजयुग्मं क्षणमपि मनसा न स्मृतोऽहं कदापि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितंवदने कामरूपे कराले॥ ३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रौढा भिक्षामिलाषी सुतदुहितृ-कलत्रार्थमन्नादिचेष्टः
क्व प्राप्सये कुत्र यामीत्यनुदिनमनिशं चिन्तया भग्नदेहः।
नो ते ध्यानं न चास्था न च भजनविधिर्नामसंकीर्त्तनं वा।
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे करालेे॥ ४॥
वृद्धत्वे बुद्धिहीनः कृशविवशतनुः श्वासकासतिसारैः
कर्मानर्होऽक्षिहीनः प्रगलितदशनाः क्षुत्पिपासाभिभूतः।
पश्चात्तापेन दग्धो मरणमनुनिंद ध्ययेमात्रं न चाऽन्यत्
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥ ५॥
कृत्वा स्नानं दिनादौ क्वचिदपि सलिलं नो कृतं नैव पुष्पं।
ते नैवेद्यादिकं च क्वचिदपि न कृतं नाऽपि भावो न भक्तिः
न न्यासो नैव पूजा न च गुणकथनं नाऽपि चाऽर्चा कृता ते
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥ ६॥
जनामि त्वां न चाऽहं भव-भयहरणीं सर्वसिद्धिप्रदात्रीं
नित्यानन्दोदयाढ्यां त्रितयगुणमयीं नित्यशुद्धोदयाढ्याम्।
मिथ्याकर्माभिलाषैरनुदिनमभितः पीडितो दुःखसङ्घैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥ ७॥
कालाभ्रां श्यामलाङ्गी विगलित चिकुरां खड्ग-मुण्डाभिरामां
त्रासत्राणेष्टदात्रीं कुणपगणशिरोमालिनीं दीर्घनेत्राम्।
संसारस्यैकसारं भवजननहरां भावितो भावनाभिः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूये कराले॥ ८॥
ब्रह्मा-विष्णुस्तथेशः परिणमति सदा त्वत् पदाम्भोज्रयुग्मं
भाग्याभावान्न चाऽहं भवजननि भवत् पादयुग्मं भजामि।
नित्यं लोभ-प्रलोभैः कृतवशमतिः कामुकस्त्वा प्रयाचे
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले॥ ९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रागद्वैषैः प्रमत्तः कलुषयुततनुः कामनाभोगलुब्धः
कार्याऽकार्याविचारी कुलमतिरहितः कौलसङ्घैर्विहीनः।
क्व ध्यानं ते क्व चाऽर्चा क्व च मनु जपन्नैव किञ्चत् कृतोऽहं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले ॥१०॥
रोगी दुःखी दरिद्रः परवशकृपणः पांशुलः पापचेता
निद्रालस्यप्रसक्तः सुजठरभरणे व्याकुलः कल्पितात्मा।
किं ते पूजाविधानं त्वयि क्व च नुमतिः क्वानुरागः क्व चास्था
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले ॥११॥
मिथ्याव्यामोहरागैः परिवृतमनसः क्लेशसङ्घान्वितस्य
क्षुन्निद्रौघान्वितस्य स्मरणविरहिणः पापकर्मप्रवृत्तेः।
दारिद्र्युस्य क्व धर्मः क्व च जननि रुचिः क्व स्थितिः साधुसङ्गैः।
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले ॥१२॥
मातस्यातस्य देहाज्जननि जठरगः संस्थितस्त्वद्वशेऽह
त्वं हर्त्री कारयित्री करणगुणमयी कर्महेतु-स्वरूपा।
त्वं बुद्धिश्चित्तसंस्थाऽप्यहमतिभवती सर्वमेतत् क्षमस्व
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले ॥१३॥
त्वं भूमिस्त्वं जलं च त्वमसि हुतवहस्त्वं जगद्वायुरूपा
त्वं चाऽऽकाशं मनश्च प्रकृतिरसि महत्पूर्विका पूर्वपूर्वा।
आत्मा त्वं चाऽसि मातः! परमसि भवती त्वत् परं नैव किञ्चित्
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले ॥१४॥
त्वं काली त्वं च तारा त्वमसि गिरीसुता सुन्दरी भैरवी त्वं
त्वं दुर्गा छिन्नमस्ता त्वमसि च भुवना त्वं लक्ष्मीः शिवा त्वम्।
धूमा मातङ्गिनी त्वं त्वमसि च बगला मङ्गलादिस्तवाख्या
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले ॥१५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तोत्रेणाऽनेन देवीं परिणमति शतं विघ्नता नाशमेति।
दुष्कृत्या दर्गसङ्घ परितरति शतं विघ्नता नाशमेति।
नाधिर्व्याधिः कदाचित् भवति यदि पुनः सर्वदा सापराधः
सर्वं तत्कामरूपे त्रिभुवनजननि क्षामये पुत्रबुद्धया ॥१६॥
ज्ञाता वक्ता कवीशो भवति धनपतिर्दानशीलो दयात्मा
निःपापी निःकलङ्की कुलपतिकुशलः सत्यवाग् धार्मिकश्च।
नित्यानन्दो दयाढ्यः पशुगणविमुखः सत्पथाचारशीलः
संसाराब्धिं सुखेने प्रतरति गिरिजापादयुग्मावलम्बात् ॥१७॥

॥ काली अपराध क्षमापन स्तोत्र समाप्तम् ॥

उपरोक्त काली स्तोत्र का पाठ प्रातःकाल स्नानादि दैनिक एवं नित्यक्रियाओं को करके कर्ता को श्रद्धा एवं भक्ति से करना चाहिए। क्योंकि इसके पाठ करने मात्र से ही घर में दरिद्रता का अन्त होता है। इसका कारण यह है कि इसके पन्द्रहवें श्लोक में काली के प्रमुख नामों का वर्णन तथा स्पष्ट लिखा है कि हे माँ! आप समस्त अपराधों एवं पापों को दूर करने में समर्थ हैं।

अतः ऐसे स्तोत्र का जो भी प्राणी श्रद्धा एवं भक्ति से सदैव पाठ करते हैं उनके नाना प्रकार के पापों का अन्त होता है। उनके परिवार में आदि-व्याधि का कभी भी प्रवेश नहीं होता है। वह सदैव भयमुक्त होकर अपना जीवनयापन करते हैं। अतः कल्याण की प्राप्ति के लिये सभी प्राणियों को इस स्तोत्र का सदैव पाठ करना चाहिये।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रूद्रयामलोक्तं

श्री कालिका-कवच

कैलास-शिखरासीनं देव-देवं जगद्गुरुम्।
शंकरं परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम्॥ १॥

पार्वती उवाच—

भगवन् देवदेवेश! देवानां भोगद प्रभो!।
प्रब्रूहि मे महादेव! गोप्यं चेद् यदि हे प्रभो!॥ २॥
शत्रूणां येन नाशः स्यादात्मनो रक्षणं भवेत्।
परमैश्वर्यमतुलं लभेद् येन हि तद् वद?॥ ३॥

भैरव उवाच—

वक्ष्यामि ते महादेवि! सर्वधर्मविदां वरे।
अद्भुतं कवचं देव्याः सर्वकामप्रसाधकम्॥ ४॥
विशेषतः शत्रुनाशं सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
सर्वारिष्टप्रशमनं सर्वाभद्र विनाशनम्॥ ५॥
सुखदं भोगदं चैववशीकरण मुत्तमम्।
शत्रुसङ्घाः क्षयं यान्ति भवन्ति व्याधिपीडितः॥ ६॥
दुःखिनो ज्वरिणश्चैव स्वाभीष्ट-द्रोहिणस्तथा।
भोगमोक्षप्रदं चैव कालिका-कवचं पठेत्॥ ७॥

विनियोगः—

ॐ अस्य श्रीकालिकाकवचस्य भैरव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकालिका देवता, शत्रुसंहारार्थं जपे विनियोगः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्यानम्—

ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम्॥ ८॥
नीलोत्पलदलश्यामां शत्रुसङ्घविदारिणीम्।
नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं च वरं तथा॥ ९॥
निर्भयां रक्तवदनां दंष्ट्रालीघोररूपिणीम्।
साट्टहासाननां देवीं सर्वदा च दिगम्बरीम्॥१०॥
शवासनस्थितां कालीं मुण्डमालाविभूषिताम्।
इति ध्यात्वा महाकालीं ततस्तु कवचं पठेत्॥११॥

कवचम्—

ॐ कालिका घोररूपा सर्वकामप्रदा शुभा।
सर्वदेवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे॥१२॥
ॐ ह्रीं ह्री रूपिणीं चैव ह्रां ह्रीं ह्रां रूपिणीं तथा।
ह्रां ह्रीं क्षों क्षौं स्वरूपा सा सदा शत्रून् विदारयेत्॥१३॥
श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणी देवी भवबन्धविमोचनी।
हुँ रूपिणी महाकाली रक्षाऽस्मान् देवि! सर्वदा॥१४॥
यया शुम्भो हतो दैतयो निशुम्भश्च महासुरः।
वैरिनाशाय वन्दे तां कालिकां शंकरप्रियाम्॥१५॥
ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका।
कौमार्यैन्द्री च चामुण्डा खादन्तु मम विद्विषः॥१६॥
सुरेश्वरी घोररूपा चण्ड-मुण्ड-विनाशिनी।
मुण्डमालावृताङ्गी च सर्वतः पातु मां सदा॥१७॥
ह्रीं ह्रीं ह्रीं कालिके घोरे दंष्ट्र व रुधिरप्रिये!।
रुधिरापूर्णवक्त्रे च रुधिरेणावृतस्तनि॥१८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

'मम शत्रून् खादय खादय हिंस हिंस मारय मारय भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि उच्चाटय उच्चाटय द्रावय द्रावय शोषय शोषय स्वाहा। ह्रां ह्रीं कालिकायै मदीय-शत्रून् समर्पयामि स्वाहा।

ॐ जय जय किरि किरि किटि किटि कट कट मर्दं मर्दं मोहय मोहय हर हर मम रिपून् ध्वंस ध्वंस भक्षय भक्षय त्रोटय त्रोटय यातुधानान् चामुण्डे सर्वजनान् राज्ञो राजपुरुषान् स्त्रियो मम वश्यान् कुरु कुरु तनु तनु धान्यं धनं मेऽश्वान् गजान् रत्नानि दिव्कामिनीः पुत्रान् राजश्रियं देहि यच्छ क्षां श्रीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्वाहा।'

इत्येतत् कवचं दिव्यं कथितं शम्भुना पुरा।
ये पठन्ति सदा तेषां ध्रुवं नश्यन्ति शत्रुवः ॥१९॥
वैरिणः प्रलयं यान्ति व्याधिता वा भवन्ति हि।
बलहीनाः पुत्रहीनांः शत्रवस्तस्य सर्वदा ॥२०॥
सहस्रपठनात् सिद्धिः कवचस्य भवेत्तदा।
तत् कार्याणि च सिद्ध्यन्ति तथा शंकरभाषितम् ॥२१॥
श्मशानाङ्गारमादाय चूर्णं कृत्वा प्रयत्नतः।
पादोदकेन पिष्ट्वा तल्लिखेल्लोहशलाकया ॥२२॥
भूमौ शत्रून् हीनरूपानुत्तराशिरसस्तथा।
हस्तं दत्त्वा तु हृदये कवचं तु स्वयं पठेत् ॥२३॥
शत्रोः प्राणप्रतिष्ठां तु कुर्यान् मन्त्रेण मन्त्रवित्।
हन्यादस्त्रं प्रहारेण शत्रो! गच्छ यमक्षयम् ॥२४॥
ज्वलदङ्गारतापेन भवन्ति ज्वरिता भृशम्।
प्रोञ्छनैर्वामपादेन दरिद्रो भवति ध्रुवम् ॥२५॥
वैरिनाशकरं प्रोक्तं कवचं वश्यकारकम्।
परमैश्वर्यदं चैव पुत्र-पौत्रादिवृद्धिदम् ॥२६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रभातसमये चैव पूजाकाले च यत्नतः।
सायंकाले तथा पाठात् सर्वसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्॥२७॥
शत्रूरुच्चाटनं याति देशाद् वा विच्युतो भवेत्।
पश्चात् किङ्करतामेति सत्यं-सत्यं न संशयः॥२८॥
शत्रुनाशकरे देवि! सर्वसम्पत्करे शुभे!।
सर्वदेवस्तुते देवि कालिके! त्वां नमाम्यहम्॥२९॥

॥ रुद्रयामलोक्तं कालिका-कवचं समाप्तम्॥

उपरोक्त कालिका कवच रुद्रयामलोक्त ग्रन्थ से लिया गया है। इस कवच को जो भी प्राणी पाठ करता है उसके समस्त शत्रुओं का नाश होता है, अर्थात् उसे अपने जीवनकाल में शत्रुओं से कभी भी भय अथवा कष्ट प्राप्त नहीं होता इसके साथ ही साथ वंश की वृद्धि अर्थात् पुत्र-पौत्रादि से वह सदैव युक्त रहते हुए इस पृथ्वी पर निवास करता है। जो भी प्राणी प्रातःकाल तथा सायंकाल इस कवच का श्रद्धा व भक्ति से पाठ करता है, उसे इस संसार की समस्त सिद्धियाँ निःसन्देह प्राप्त होती है। इसके साथ ही साथ शत्रुपक्ष पर उसका पूर्ण प्रभुत्व स्थापित होता है। इस काली कवच की यह विशेषता सर्व विदित है। अतः अपने जीवन में कल्याण की प्राप्ति के लिए इस कवच का पाठ सभी प्राणियों को करना चाहिये।

❊ 卐 ❊

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री काली चालीसा

दोहा

जय जय सीताराम के मध्य वासिनी अम्ब।
देहु दरस जगदम्ब अब, करहु न मातु विलम्ब॥

चौपाई

जय काली कंकाल मालिनी।
जय मंगला महाकपालिनी॥
रक्तबीज वध कारिणि माता।
सदा भक्तन की सुखदाता॥
शिरोमालिका भूषित अंगे।
जय काली मधु मद्य तरंगे॥
हर हृदयारविन्द सुविलासिनी।
जय जगदम्ब सकल सुखनासिनी॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ह्रीं काली श्री महाकराली।
क्रीं कल्याणी दक्षिणकाली॥
कलावती जय जय विद्यावति।
जय तारासुन्दरी महामति॥
देहु सुबुद्धि हरहु दुख द्वन्दा।
काटहु सकल जगत के फन्दा॥
जय ओ३म् कारे जय हुंकारे।
महाशक्ति जय अपरम्पारे॥
कमला कलियुग दर्प विनासिनी।
सदाभक्तजन की भयनासिनी॥
अब जगदम्बा न देर लगावहु।
दुख दरिद्र सब मोर हटावहु॥
जयति कराल काल की माता।
कालानल समान द्युतिगाता॥
जय शंकरी सुरेशि सनातनि।
कोटि सिद्धि कविमातु पुरातनि॥
कपर्दिनी कलि कल्मष मोचनि।
जै विकसित नव नलिन विलोचनि॥
आनन्दा आनन्द निधाना।
देहु मातु मोहि निर्मल ज्ञाना॥
करुणामृत सागरा कृपामयि।
होहु दुष्ट जन कहँ तुम निर्दयी॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सकल जीव तोहि परम पियारे।
सकल विश्व तव रहहिं अधारे॥
प्रलय काल महँ नर्तन कारिणि।
जग जननी सब जग की पालिनी॥
महोदरी माहेश्वरी माया।
हिमगिरि सुता विश्व की छाया॥
स्वच्छच्छरद मरद धुनिमाँहीं।
गरजत तू ही और कोउ नांहीं॥
स्फुरित मणिगणाकार प्रताने।
तारागण तू व्योम बिताने॥
श्रीधाने सन्तन हितकारिणी।
अग्निपाणि तुम दुष्ट विदारिणि॥
धूम्र विलोचन प्राण विमोचिनी।
शुम्भ निशुम्भ मथनि वर लोचनि॥
सहसभुजी सरोरुह मालिनि।
चामुण्डे मरघट की वासिनी॥
खप्पर मध्य सुशोणित साजी।
संहारेउ महिषासुर पाजी॥
अजा एकरूपा बहुरूपा।
अकथ चरित्रा शक्ति अनूपा॥
कलकत्ता के दक्षिण द्वारे।
मूरति तोरि महेशि अपारे॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कादम्बरी पानरत श्यामा।
जय मातंगी अनूप अकामा॥
कमलासन वासिनी कमलायनि।
जय जय श्यामा जय यामायनि॥
रासरते नवरसे प्रकृति हे।
जयति भक्त उर कुमति सुमति हे॥
जयति ब्रह्म शिव विष्णु कामदा।
जयति अहिंसा धर्म जन्मदा॥
जलथल नभ मण्डल में व्यापिनि।
सौदामिनी मध्य आलापिनि॥
झननन तच्छुमरिन रिन नादिनी।
जय सरस्वती वीणा वादिनी॥
ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं चामुण्डा।
कलित कण्ठ शोभित नरमुण्डा॥
जय ब्रह्माण्ड सिद्ध कवि माता।
कामाख्या काली विख्याता॥
हिंगुलाज विन्ध्याचल वासिनि।
अट्टहासिनी अधगन नासिनि॥
कहँ लगि अस्तुति करहुं अखण्डे।
तू ब्रह्माण्ड शक्तिजित चण्डे॥
करहु कृपा सब पै जगदम्बा।
रहहिं निशंक तोर अवलम्बा॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर्भुजी काली तुम श्यामा।
रूप तुम्हार महा अभिरामा॥
खड्ग और खप्पर कर सोहत।
सुरनर मुनि सबको मन मोहत॥
तुम्हरी कृपा पावे जो कोई।
रोग शोक नहिं ताकहँ होई॥
जो यह पाठ करै चालीसा।
तापर कृपा करहिं गौरीशा॥

दोहा

जय कपालिनी जय शिवा, जय जय जय जगदम्ब।
सदा भक्तजन केरि दुख, हरहु मातु अविलम्ब॥

॥ इति श्री काली चालीसा सम्पूर्णम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री काली जी की आरती

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट धरे॥
सुन जगदम्बा! कर न विलम्बा, सन्तन के भण्डार भरे।
संतन प्रतिपाली, सदा खुशाली, जै काली कल्याण करे॥ १ ॥

बुद्धि विधाता, तू जगमाता, मेरा काज सिद्ध करे।
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन परे॥
जब जब भीर पड़ी भक्तन पर, तब तब आय सहाय करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जै काली कल्याग करे॥ २ ॥

बार बार तैं सब जग मोह्यो, तरुणी रूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावे, कहीं भार्या हो भोग करे॥
संतन सुखदाई सदा सहाई, सन्त खड़े जयकार करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जै काली कल्याण करे॥ ३ ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश सहसफन, लिए भेंट तेरे द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र धरे॥
हुए शनिश्चर कुंकुमवरणी, जब लांगुर पर हुकुम करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जै काली कल्याण करे॥ ४ ॥
कुपित होइकर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे।
खड्ग त्रिशूल हाथ में लेकर, रक्तबीज को भस्म करे॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शुम्भ निशुम्भ पछाड़े माता, महिषासुर को पकड़ दरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जै काली कल्याण करे॥ ५॥

जब तुम दयारूप को धारो, पल में संकट दूर करे।
आदितवार आदि का राजत, अपने जन का कष्ट हरे॥
सौम्य स्वभाव धरा मेरी माता, जन की अरज कबूल करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जैकाली कल्याण करे॥ ६॥

सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी, अटल भवन में राज करे।
दर्शन पावें मंगल गावें, सिद्ध साधु चर भेंट धरे॥
ध्यान धरत ही श्री काली को, चार पदारथ हाथ परे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जै काली कल्याण करे॥ ७॥

ब्रह्मा वेद पढ़ै तेरे द्वारे, शिवशंकर जी ध्यान धरें।
इन्द्र कृष्ण तेरी करें आरती, चँवर कुबेर डुलाय करे॥
जय जननी जय मातु भवानी, अचल भवन में राज करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जैकाली कल्याण करै॥ ८॥

※ 卐 ※

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विचारों को उन्नत बनाने वाली पुस्तकें

- कर्मफल और पुनर्जन्म
- आत्मज्ञान की साधना
- योग साधना और उसके लाभ
- प्रार्थना और उसका प्रभाव
- साधना, ध्यान और जप
- मनन चिन्तन
- भोग से योग की ओर
- वेदों के उपदेश
- उपनिषदों के उपदेश
- रामायण, महाभारत के उपदेश
- पुराणों के उपदेश
- वेदाध्ययन कैसे करें
- संचित धन
- विचार शक्ति
- राजा निर्मोह की कथा
- नदी नाव संजोग (प्रवचन)
- चढ़ती कला (प्रवचन)
- ऋग्वेद सार
- यजुर्वेद सार
- सामवेद सार
- अथर्ववेद सार
- प्रेरक प्रसंग
- दृष्टांत प्रकाश
- दृष्टांत दीपक
- बिखरे मोती
- ११०० रस बिन्दु
- ज्ञान गंगा (सूक्ति संग्रह)
- मृत्यु और परलोक यात्रा
- ज्ञान मार्ग के सोना चांदी
- मन की अद्भुत शक्तियाँ
- ध्यान साधना
- सुख की ओर
- कण कण में भगवान
- अध्यात्म, विज्ञान और धर्म
- धर्म का मर्म
- सचित्र पंचतंत्र
- सचित्र हितोपदेश
- विवेकानन्द चरित्र और उपदेश
- जीवन स्वामी रामतीर्थ
- कुण्डलिनी सिद्धि
- अनमोल भजन
- भजन माधुरी

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection